रसिक दोउ निरतत रंग भरे।

रास कुंज में रास मंडल रचि, जनक लली रघु लाल हरे।।

अमित रूप धरि करि कछु चेटक, जुग जुग तिय मधि श्याम अरे।।

Scanned by CamScanner

जयति युगल सरकार सतत परिकर मन भावन ।
जय--जय "सीताशरण" प्रेम लम्पट पिय पावन ।।६१।।

दो०–जयति किशोरी कृपा मयि, जय–जय प्राण अधार ।
जय–जय सीताशरण प्रिय, जय–जय दोउ रिझवार ।।१।।
जयति स्वामिनी सीय मम, जय-जय नृपति कुमार ।
जय-जय युगल किशोर वर, जय-जय परम उदार ।।२।।
जयति लाड़िली सुठि सुखद, जय-जय सिय हियहार ।
जय–जय पिय प्यारी युगल, जय–जय रस दातार ।।३।।
जयति मैथिली मोद निधि, जय-जय पिय रिझवार ।
जय-य सीताशरण दोउ, मम जीवन आधार ।।४।।

इति श्री युगल रहस्य माधुरी बिलासे, बिबाहोत्तर गन्धर्व कन्या रस रासे, सीताशरण सुमति प्रकाशे एकादशोऽध्यायः सम्पूर्णमस्तु ।

* द्वादशोऽध्यायः *

* मिथुनार्के किन्नरसुता रास प्रकरणम् *

छन्दरोला—

श्री रघुवर प्रिय भक्त सकल भक्तन हितकारी ।
सर्व समर्थ उदार वायु नन्दन सुखकारी ।। १ ।।
बुद्धिमान सज्जन सुमित्र अंजनी सुवन वर ।
भाव भक्ति भंडार भक्त पालक सुशील तर ।। २ ।।
श्री हनुमान सुजान चरण में कोटि प्रणामा ।
करौं सनेह समेत मोहिं दीजिय विश्रामा ।। ३ ।।

Scanned by CamScanner

पुनि बोले श्री सूत मैथिली युत रघुनन्दन ।
सुकुमारी नायिकन सहित रस निधि जग वन्दन ॥ ४ ॥
ग्रीषम सु ऋतु बिचारि धरागृह नव निकुंज वर ।
गुप्त भवन अति अमल सुखद वर अति प्रकाश कर ॥ ५ ॥
तहँ आये रसिकेश जहाँ ग्रीषम ऋतु केरी ।
ताप न कबहूँ जाय सजे सुख स्वाद घनेरी ॥ ६ ।
चन्दन लेपित भवन झरोखन मधि सुगन्ध वर ।
खस की टटियाँ लगीं ललित रचना युत मन हर ॥ ७ ॥
वीणा अरु बहु वाद्य मनोहर सदृश सुखद वर ।
चमत्कार संयुक्त मधुर प्रिय परम सरस तर ॥ ८ ॥
वंशी कला सदृश्य अनुकरण कारक मन हर ।
कलरव कोकिल केर हृदय में परम मोद कर ॥ ९ ॥
परम सुहावन लगै महाँ शोभा प्रगटावत ।
परिकर युत दोउ रसिक सुनत हिय में उमगावत ॥१०॥
नृत्यत बालाङ्गना विपुल आनन्द समाई ।
नूपुर किंकिणि शब्द कोटि विधि लगत सुहाई ॥११॥
पूरि रही झनकार मनोरम कुंज मझारी ।
बने विपुल चित्राम ललित मन हर सुखकारी ॥१२॥
गूगुल धूप सुगन्ध भरित वर भवन अनूपा ।
तहँ राजत मैथिली युक्त सखि सँग रघुभूपा ॥१३॥
गज सु दाँत के पलँग रत्न मणि जटित मनोहर ।
विलसत विपुल प्रकार परम सुषमा निधि सुख कर ॥१४॥

Scanned by CamScanner

ऐसे गृहन मझार सु रस उत्पादक छवि धर ।
इच्छारूपी वृक्ष विवर्धक रूप रसिक वर ॥१५॥
रसमय नाना भाँति करत बारता सुहावन ।
श्यामा श्री मैथिली संग रँग रँगि मन भावन ।१६॥
रमत रसिक शिर मौर प्रियै निज अङ्ग रमाई ।
लेत देत सुख स्वाद अमित विधि श्री रघुराई ॥१७॥
तैसेहिं विपुल सु वाम संग रमि श्री रघुनन्दन ।
निज अंग सबहिं रमाय प्रेम पालक जग वन्दन ॥१८॥
दियो परम सुख स्वाद सबहिं रस रंग रँगाई ।
करत केलि कमनीय सखिन रुचि प्रद रघुराई ॥१९॥
पावत परमानन्द परम रस सिन्धु समाये ।
परिकर युत मैथिली संग प्रीतम हर्षाये ॥२०॥
पुनि षटरस सम्पन्न भोज्य अरु भक्ष्य चोष्य वर ।
पेय सु व्यंजन विपुल तृप्ति कर परम सरस तर ॥२१॥
पावत सखियन संग प्रिया को स्वकर पवाई ।
प्यारी कर सों पाय परम आनन्द समाई ॥२२॥
तृप्त होत सुख धाम परम अभिराम मोद घर ।
सखिन सहित सियसंग रँगे रसरंग रसिक वर ॥२३॥
तत्पश्चात् सुगन्ध भरे सुठि अलङ्कार वर ।
सौम्य परम मन हरन मनोरम सुखद मोद कर ॥२४॥
सबनि अलंकृत कीन स्वयं निज ललित श्रृँगारा ।
नखसिख मन हर सज्यो रसिक मणि रूप उदारा ॥२५॥

Scanned by CamScanner

पुनि सुगन्धमय सरस पान वाटिका सोहावन।
सखियन सहित पवाय प्रियै पावत मन भावन ।।२६।।
विपुल नवल नायिका पान पावत हर्षाई।
निज कर भरि अनुराग प्राण वल्लभहिं पवाई ।।२७।।
सरस सुगन्धन भरे अतर मन मुदित लगावत।
सखियन युत सिय अंग माहिं प्रीतम सुखपावत ।।२८।।
तैसेहि सखियन सहित प्रिया अति हिय हुलसाई।
प्रीतम अंग लगाय अतर आनन्द समाई ।।२९।।
निकटहिं चारो ओर मनोहर कुण्ड सरित वर।
झरना वापी विपुल कूप विलसत प्रमोद कर ।।३०।।
निर्मल जल गम्भीर सुधासम सुखद सोहावन।
विकसे विविधि सु बनज परम सुषमा प्रगटावन ।।३१।।
तिन में प्रीतम प्रिया सखिन सँग आनँद पाई।
करत केलि कमनीय परम रस निधि सुख दाई ।।३२।।
पावत अति उत्कर्ष हर्ष प्रीतम अरु प्यारी।
करत विनोद विहार विपुल विधि रति रस कारी ।।३३।।
पुनि श्री रसिक नरेश प्राण वल्लभ रस सागर।
नायक नवल किशोर रास रसिया नव नागर ।।३४।।
करत सुमन श्रृंगार प्रिया को स्वकर सँवारी।
तैसेहिं श्री मैथिली पिया को परम सुखारी ।३५।।
नख सिख सुमन श्रृँगार सजावति हिय उमगाई।
निरखि मंजु माधुरी लहत सुख स्वाद अघाई ।।३६।।

Scanned by CamScanner

दोउ की छवि दोउ निरखि परस्पर अति सुख पावत ।
"सीताशरण" सनेह सने पुनि पुनि वलि जावत ॥३७॥
राई लोन उतारि तोरि त्रण प्यार समाये ।
वारि पियत दोउ बारि-बार बहु कण्ठ लगाये ॥३८॥
पुनि श्रीराजकिशोर सकल सखियन को निज कर ।
सजत सुमन श्रृंगार मनोहर नख सिख सुन्दर ॥३९॥
तैसेहिं सब नायिका पिया को स्वकर श्रृँगारत ।
रूप अनूप विलोकि सकल निज तन मन वारत ॥४०॥
पुनि सबकी रुचि रखन हेत प्रीतम सुजान वर ।
करत विहार विनोद सबनि सँग हिय उमंग भर ॥४१॥
देत सबहिं सुख स्वाद यथा रुचि श्री रघुनन्दन ।
रमत रसिक शिरमौर सबनि सँग पिय जग वन्दन ॥४२॥
ते सब अति सुखपाय आपने भाग्य बड़ाई ।
करैं पाय पिय प्यार हृदय में अति हर्षाई ॥४३॥
सो सुनि होवत कलह परस्पर सखिन मझारी ।
वाहि करत पिय शमन चतुर्वर रास विहारी ॥४४॥
कबहुँ प्रिया को मान जानि पिय हिय अकुलाई ।
करत मनावन विपुल भाँति रस निधि ललचाई ॥४५॥
येहि विधि बीतत काल अपरमित क्रीड़ा माहीं ।
सखियन युत मैथिली संग पिय हिय हर्षाहीं ॥४६॥
कबहुँ ग्रीष्म ऋतु माहिं सरयु तट दिव्य बाग वर ।
विटप विचित्र विशेष विबुध वर वृत्त सरिस सर ॥४७॥

Scanned by CamScanner

सरमें विकसे बनज विटप वर वेलि समेता ।
फूले फले अपार तहाँ अलि वृन्द सचेता ॥४८॥
करत मधुर गुंजार परम मन हर सुखदाई ।
कोकिल कलरव करै सुनत मन मोद बढ़ाई ॥४९॥
लता निकुंज अनेक परम प्रिय सुखद सु मन हर ।
तेहिथल(सीताशरण)सखिन युत सिय पिय छविधर ॥५०॥
करत अनेकन केलि परमं आनन्द समाई ।
विलसत विपुल विनोद भरे रस निधि हर्षाई ॥५१॥
ललित रसाल विशाल विटप तिन में उमगाई ।
सजैं हिंडोला साज सखी सब मोद मनाई ॥५२॥
प्रीतम प्रियै बिठाय सकल हिय अति सुखपावैं ।
वीण मृदंग सितार विपुल वर वाद्य बजावैं ॥५३॥
नृत्यैं भरि अनुराग राग हिंडोल सुनावहिं ।
युगल माधुरी निरखि-निरखि निज तन मन वारहिं ॥५४॥
परम विलासी लाल ललचि गावत अति मृदु स्वर ।
मेघ मल्हार सुगौड राग रस पगे उमगि उर ॥५५॥
अमित फुहारे चलत झरत झरना तिन माहीं ।
कल-कल अति प्रिय शब्द सुनत परिकर हर्षाहीं ॥५६॥
हरिचन्दनादि विपुल सु सौरभ भरित स्वच्छ जल ।
सुधा सरिस प्रिय मधुर सुखद सबविधि अति निर्मल ॥५७॥
भरित सु नाली बहैं विपुल निरखत मन भावैं ।
परिकर परम प्रमोद पगे क्रीड़त सुख पावैं ॥५८॥

Scanned by CamScanner

यद्यपि ग्रीषम काल तदपि हेमन्त सदृश वर।
शोभा बढ़ी अपार पार पावै को कह कर ॥५९॥
येहि विधि ग्रीषम काल रात्रि में किन्नर वाला।
स्वामिनि आयसु पाय करैं सुठि रास रसाला ॥६०॥
नृत्यहिं भरि अनुराग सकल नायिका नवीनी।
गावहिं राग रसाल प्रिया प्रीतम रस भीनी ॥६१॥
मन्मथ उत्सव सरस विवर्धक रूप रसिक वर।
श्री विदेह नन्दिनी सहित सिंहासन ऊपर ॥६२॥
विलसत राजकुमार मार मद मर्दन मन हर।
देखत रसमय रास मुदित प्यारी गर भुज धर ॥६३॥
पिय जेहि रास मझार स्वकर आनन्द समाई।
नख सिख कियो शृँगार प्रिया को ललित बनाई ॥६४॥
प्यारी प्रथमै स्वकर कंज हिय अति उमंग भर।
कियो सुभग शृंगार पिया को नख सिख मन हर ॥६५॥
इमि प्रीतम अरु प्रिया परम प्रेमामृत पागे।
अरस परस शृंगार मनोहर करि अनुरागे ॥६६॥
किन्नर वालन केर कियो सुठिरास रसाला।
निरखत युगल किशोर परस्पर फसि छवि जाला ॥६७॥
कामुक जगत मझार सबनि नायक श्री रघुवर।
निरखत रास विलास स्वाद सुख भोगत मुद भर ॥६८॥
किन्नर वाला वृन्द रास किन्नरहिं ताल से।
कियो मुदित प्रारम्भ बाँधिरति रस सु जाल से ॥६९॥

याते वह वर रास किन्नरी तालाश्रित अति ।
शोभित अतिसय भयो पाय देशी सु राग गति ॥७०॥
यद्यपि पूरण काम राम रघुवंश दिवाकर ।
सुख सुषमा आगार प्रेम पालक प्रतिभाकर ॥७१॥
तदपि श्रवण करि गान तान सङ्गीत मधुर तर ।
अति कामातुर भये प्रेम लम्पट रसिकेश्वर ॥७२॥
अस अद्भुत रस मिलो पियै येहि ताल मझारी ।
धरि न सके उर धीर धीर धुर रास विहारी ॥७३॥
अति मदनाकुल लाल सहज रमणीय वेश वर ।
रूप अनूप उदार मोद मन्दिर सनेह घर ॥७४॥
विम्बा ज्यौं सुठि अधर अरुण लावण्य भरित वर ।
रसमय अति मन हरन अचेतन हृदय मोह कर ॥७५॥
जिनको देखत मात्र जगत में को तन धारी ।
जो विमुग्ध हो जाय न आपन दशा विसारी ॥७६॥
चेतन जड़वत होत जगत हिय में अभिलाषा ।
कौन भाँति चखि अधर सुधा अति लहौं हुलासा ॥७७॥
आदि सुकवि श्री वालमीक ऋषि कहा पुकारी ।
श्री रघुवर छवि निरखि विकैं नर होश विसारी ॥७८॥
चन्द्रकान्ति कमनीय मान मर्दन रघुवर छवि ।
दर्शन अतिसय सुखद परम प्रिय वरणै को कवि ॥७९॥
रूप अनूप उदार शील गुण पुरुष विमोहन ।
बर्वस "सीताशरण" हरत चित दृष्टि सु जोहन ॥८०॥

Scanned by CamScanner

हे शौनक मुनिराज आप हिय लखिय विचारी।
जेहि लखि मोहैं पुरुष कवन गिनती में नारी ॥८१॥
वह कामिनी कहात सतत कामातुर रहहीं।
यह अति प्रचलित बात संत श्रुति सज्जन कहहीं ॥८२॥
लिखत अपर आचार्य जासु सौन्दर्य बड़ाई।
वृक्ष होत स्तब्ध जाहि लखि हिल न सकाई ॥८३॥
और कुरंग विहंग मेघ जल पर्वत नागा।
चेतन जड़वत होत जाहि लखि पगि अनुरागा ॥८४॥
कोकिल कीर मयूर लता फल सुमन अनूपा।
मोहत जावत पंथ माहिं लखि रघुवर भूपा ॥८५॥
अपर कौन की कहौं निरखि जेहि परम निकाई।
असुर विमोहित भये बिनागथ गये बिकाई ॥८६॥
तेहि लखि मोहैं नारि कवन आश्चर्य कहाई।
येहि विधि "सीताशरण" सूत बोले हर्षाई ॥८७॥
इमि पिय के अँग माहिं सकल अवयव सुखदाई।
स्वाभाविक रमणीय चराचर कर्षकताई ॥८८॥
पुनि जब मृदु मुसुकाय वदत मृदु करि कटाक्ष वर।
चलत रसीली चाल सुबाँकी तिरछी छवि धर ॥८९॥
सो निरखत नहिं बिकै बिनागथ को तन धारी।
तब यदि मोहैं नारि कहिय क्या अचरज भारी ॥९०॥
विपुल चेष्टा निरखि पिया की सब बर वामा।
परम विमोहित भईं अर्पि चित पियहिं ललामा ॥९१॥

Scanned by CamScanner

बहुरि भाव अनुभाव विभावादिक सुक्रिया वर ।
लखि अति शोक समाय गिरे मुर्छाय सकल सुर ॥९२॥
सुरन रहा अभिमान कि हम सम या जग माहीं ।
रूप नृत्य वर कला विज्ञ सुख भोक्ता नाहीं ॥९३॥
अब लखि श्री रघुवीर महाँ रस रास सोहावन ।
क्रीड़ा केलि कलोल सु कौतुक मोद बढ़ावन ॥९४॥
हिय में अति सकुचाय सकल अभिमान गमाई ।
चिन्ताशोक समाय गिरे मुर्छित पछिताई ॥९५॥
पुनि सब किन्नर सुता दिव्य तर दिव्य महाना ।
नृत्य कला संगीत विज्ञ सँग रसिक सुजाना ॥९६॥
अन्तरिच्छ में जाय अनूपम अद्भुत मन हर ।
प्रगट कियो संकल्प सत्य से रास चौक वर ॥९७॥
चहुँदिशि चक्राकार सखी नृत्यत उमगाई ।
मध्य लसत रसिकेश श्याम सुन्दर रघुराई ॥९८॥
पर तर परम परेश प्रेम पालक पिय नागर ।
वन्दित शिव अज पाद पद्म रसनिधि सुख सागर ॥९९॥
नृत्यहिं पिय के संग सकल नायिका रँगीली ।
गावहिं (सीताशरण) रूप रस छकि गर्वीली ॥१००॥

दो०—लखि तिन को सुठि रास वर, श्री मैथिली उदार ।
सीताशरण प्रसन्न हो, दियो अमित मणिहार ॥ १ ॥

पुरुष्कार बहु दिये सबहिं अति कियो सुखारी ।
श्री मैथिली उदार मंजु मूरति मन हारी ॥ १ ॥

Scanned by CamScanner

विविध बस्तु बहु भोग्य तिनहिं दै अवनि कुमारी ।
दीनो "सीताशरण" सबहिं अनुपम सुख भारी ॥ २ ॥

❀ विद्याधर कन्या रास प्रकरणम् ❀

छन्द रोला:-

येहि विधि मास अषाढ़ ग्रीष्म ऋतु की प्रिय लीला ।
प्राण प्रिया के साथ कीन रघुवर सुख शीला ॥ ३ ॥
विपुल किन्नरी वृन्द विवन्दित युगल रसिक वर ।
निवसहिं मम उर माहिं परस्पर परम प्यार भर ॥ ४ ॥
यह वर विशद विहार माहिं अतिसय रुचि मेरी ।
होवै पावन प्रेम कृपा अस करिय घनेरी ॥ ५ ॥
मम उर के कामादि रोग सब नाश करैं प्रभु ।
देवैं सुठि सन्तोष परम मृदु चित उदार विभु ॥ ६ ॥
मम हिय के सन्ताप सकल नाशैं रसिकेश्वर ।
जीवन प्राण अधार स्वजन मुद प्रद हृदयेश्वर ॥ ७ ॥
येहि विधि श्रीमद् सूत विनय प्रीतम सों करि के ।
वर्णत "सीताशरण" केलि कौतुक सुख भरि के ॥ ८ ॥
ग्रीषम ऋतु जिय जानि चन्द्रमणि रचित महल वर ।
तिनमधि निवसन हार विमलविधुविपुल कान्ति हर ॥ ९ ॥
सुषमा सींव उदार कोटि मन्मथ मद मर्दन ।
रास रसिक शिर ताज राजनन्दन रस वर्धन ॥१०॥
रूप अनूप अपार स्वकीयन संग रंग रँगि ।
करत विहार विनोद विपुल विधि परम प्यार पगि ॥११॥

Scanned by CamScanner

नायक नवल किशोर निपुण नित नव छविधारी ।
अंग-अंग रस रूप सुशोभित रास विहारी ।।१२।।
युवावयस सम्पन्न परम लावण्य प्रेम घर ।
युवती बृन्द असंख्य संग चौसर सु केलि कर ।१३।।
आलिंगित भल किये वाम दिशि प्राण पियारी ।
कृपामयी प्रियमूर्ति मधुर मृदु जनक दुलारी ।।१४।।
पाशा खेलत समय परम चंचल सु कन्ध पर ।
कुण्डल लोल कपोल प्रकाशित करत मोद कर ।।१५।।
सुठि वक्षस्थल मध्य सु मोती मणि कृत माला ।
विलसति परम चलाय मान मनहर छवि जाला ।।१६।।
निज युवती गण सहित केलि क्रीड़ा रत रघुवर ।
किये तिरस्कृत इन्द्र काहिं निज छवि से रस धर ।।१७।।
प्यारी को कर एक लसत प्रीतम सु कन्ध पर ।
आरोपित भल भाँति किये उर सों सनेह भर ।।१८।।
सिय कर कंजन माहिं अँगुरियन मुदरी सोहत ।
पूरित प्रभा सु कन्ध पिया को अति मन मोहत ।।१९।।
गजमुक्ता मणि रचित दिव्य वर मुकुट शीश पर ।
विलसति अतिकमनीय अमितरबि शशि सुकान्ति हर।।२०।।
प्ररम प्रकाशित होत छटा छावत चहुँ ओरी ।
ललना लसैं अनूप रूप गुण निधि रस बोरी ।।२१।।
पीताम्बर कमनीय अंग में धारण कीने ।
निरखत चित वित हरत मन्द मुसुकत रस भीने ।।२२।।

Scanned by CamScanner

परम अरुणिमा युक्त प्रकाशित नख सु अधर वर ।
नील कुटिल स्निग्ध अलक झलकत प्रमोद कर ।।२३।।
जो सर्वदा प्रसन्न परम आनन्द स्वरूपा ।
सुख सुषमा आगार प्रेम पूरित रस रूपा ।।२४।।
अमल कमल सम नयन चयन प्रद परम सुघर वर ।
लसतललित करकंज मंजु पद कंज अरुण तर ।।२५।।
भुज प्रलम्ब अति पुष्ट सुभग मन हरन उदारा ।
सुन्दरतारस सिन्धु स्वजन रक्षक सुख सारा ।।२६।।
सकल अंग अति मधुर ललित मनहर रस रूपा ।
निज रमणी वश करन काम प्रद परम अनूपा ।।२७।।
उद्दीपक शुचि काम केलि क्रीड़ा रत छवि घर ।
ललित लता वर कुंज मध्य बहु विधि विहार कर ।।२८।।
लतन सु पुष्पन केर परम रस मय सु गन्ध वर ।
सुधा सरिस प्रिय मधुर ग्रहण कर्ता उदार तर ।।२९।।
कमल पंक्ति वर मध्य प्रेम युत अति अनन्द कर ।
जासु सुगन्धी लागि मधुप गुंजत उमंग भर ।।३०।।
सुर किन्नर वर बाल विपुल आनन्द प्रदायक ।
रघुकुलमणि रसिकेश श्याम सुन्दर सब लायक ।।३१।।
कुसुमित कलित कदंब सुमन सुठि सौरभ लेकर ।
सेवन करत सनेह सहित श्री पवन देव नर ।।३२।।
येहि विधि ललित कदंब केर सौभाग्य निहारी ।
अन्य विटप वर वेलि सकल निज डाल पसारी ।।३३।।

जिन को नाहिन समय वहू फूले हर्षाई।
निज-निज सम्पति सुभग सबनि ने अति प्रगटाई ।।३४।।
कलित कुंज चहुँ ओर बिरुध अति फूल भार सों।
नीचे रहे झुकाय भरे हिय परम प्यार सों ।।३५।।
सोचत सब मन माहिं आदरहिं हमैं कुँअर वर।
याही से अति सुमन प्रगट कीन्हें सनेह भर ।।३६।।
याही भाँति अनूप राजवल्लियाँ अपारा।
सुमन सु सज्जित प्राण धनहिं सेवत भरि प्यारा ।।३७।।
सुभग चिरौंजी पनस मनोहर ललित रसाला।
मंजु मधुर फल फलित सु शोभित परम विशाला ।।३८।।
सेव सरस अंगूर मधुर किसमिस सुखदाई।
सुठि अनार अमरूद संतरा विटप झुकाई ।।३९।।
अपर अनेकन वृक्ष सकल फल फले सोहावन।
मो कहँ आदर देहिं राज नन्दन मन भावन ।।४०।।
येही सोचि मन माहिं सकल फूले विन काला।
प्रगटे सुफल सुस्वाद भरे प्रिय सुखद रसाला ।।४१।।
विपुल नायिका सहित प्रियै निज हाथ पवाई।
पावत परमानन्द प्रेम रस निधि रघुराई ।।४२।।
तैसेहिं श्री मैथिली पियै हँसि स्वकर पवावहिं।
बिमल बदन विधु निरखि हृदय में अतिसुख पावहिं ।।४३।।
करत प्रशंसा भूरि प्रियन युवराज कुँअवर वर।
पावत परम प्रमोद प्रेम पालक उदार तर ।।४४।।

षड्ज आदि प्रिय शब्द नृत्य से सुठि मयूर वर ।
पिय की सेवा करत सकलहिय में उमंग भर ।।४५।।
वंशी सम सुठि सुखत करैं कलरव सु कंठि वर ।
वीण सरिस स्वर सप्त मधुर कर पत्ती मन हर ।।४६।।
अति अनुराग समेत सरस संगीत प्रगट करि ।
सेवत सब रघुवरहिं प्रिया युत हिय उमंग भरि ।।४७।।
तैसेहि सारस आदि भेकगण आनँद पाई ।
निज सु जाति अनुसार सरस ध्वनि नृत्य दिखाई ।।४८।।
सेवा करत स नेह सहित सब मोद मनाई ।
तेहि त्तण अम्बर माहिं मेघ माल घिरि आई ।।४९।।
परम सुखद प्रिय करन हेत जनु ललित विताना ।
सिय रघुवर सुख हेत मेघ मण्डल प्रगटाना ।।५०।।
येहि विधि दै आनन्द रघुवरहिं शुचि सुन्दर वर ।
प्राप्त कियो सुठि भाव मेघ माला हर्षित उर ।।५१।।
येहि विधि लहि सुख स्वाद रूप रसिया हृदयेश्वर ।
पावस आगम जान मुदित मन भये रसेश्वर ।।५२।।
स्वर्ण आदि बहु रत्न विपुल स्फटिक सु मणि वर ।
तिन सो अति परिपूर्ण ललित लीलाचल शुचि तर ।।५३।।
तहँ गमने रसिकेश राजनन्दन मन भावन ।
जहँ असंख्य रमणीक ललित अति महल सोहावन ।।५४।।
तिन में पगि अनुराग प्रियै आलिंगन कीन्हें ।
बिहरत श्री नर देव सुवन अगणित सखि लीन्हें ।।५५।।

Scanned by CamScanner

पिय विहार रुचि जानि मेघ मण्डल हर्षाई ।
आये सिय पिय पास सु सेवा प्रगटि जनाई ॥५६॥
लीलाचल वर भवन मध्य विलसत पिय प्यारी ।
करत विनोद विलास विपुल विधि रति रस कारी ॥५७॥
पिय सुख हित मन मुदित मृदुल चित राजकिशोरी ।
विद्याधर वर बाल विपुल सब प्रेम विभोरी ॥५८॥
तिनहिं सु आयसु दई ललित संगीत प्रकट कर ।
करवावहु रस स्वाद पियहिं हिय अति उमंग भर ॥५९॥
सुनि विद्याधर सुता वन्दि पग अति सुख मानी ।
प्रगटायो संगीत ललित मन हर रस सानी ॥६०॥
सब अभीत चित मुदित सुभग देशी सु ताल वर ।
मार्ग ताल संयुक्त सरस संगीत भाव भर ॥६१॥
गावहिं नव नायिका नेह नमि नव-नव छन्दन ।
प्रगटहिं "सीताशरण" मधुर सुठि सरस प्रबन्धन ॥६२॥
काम कला कल कुशल केलि कौतुक कलोल कर ।
करवावहिं रस स्वाद पियै सब हिय उमंग भर ॥६३॥
वह सब निशि सुख रूप माहिं सुठि मेघहु से अति ।
कुसुमरंग वर बस्त्र किये धारण पिय शुचिमति ॥६४॥
पिय रामागण विपुल वरण वर चित्र विचित्रा ।
पहिरे बसन अनूप अमल अद्भुत सु पवित्रा ॥६५॥
नृत्यहिं भरि अनुराग परम चंचलता लीने ।
अङ्ग कान्ति कमनीय ललित चपला छबि छीने ॥६६॥

Scanned by CamScanner

परम सुशोभित होहिं राम रमणी वर वामा ।
विद्याधर वर जाति प्रगट छविनिधि अभिरामा ॥६७॥
श्री मैथिलिहिं प्रसन्न करन हित निज सु जाति वर ।
विद्या केर प्रभाव जनावहिं हिय प्रमोद भर ॥६८॥
नृत्य कला कमनीय केर बहु भेद दिखाये ।
वरणौं तिन में कछुक सखिन ने जो प्रगटाये ॥६९॥
हंस, मयूर, सु वृषभ, धेनु, पुनि वत्स, सिंह, वर ।
गज, आदिक श्वापद सु जाति के भेद मोद भर ।७०॥
अपर अनेक प्रकार सुभग आकृति सु शब्द वर ।
चित्र विचित्र अनूप चित्र प्रगटाये सुख कर ॥७१॥
गैंडा आदिक पशु सुवृत्त फल लता चित्र प्रिय ।
दिखलाये बहु भाँति सखिन सुखकर प्रमुदित हिय ॥७२॥
कुमुदादिक जल पुष्प कमल कोमल प्रिय पावन ।
मण्डित चित्र अनूप दिखाये अति मन भावन ।७३॥
श्री मिथिलाधिप लली निरखि हिय अति सुख पायो ।
कीन प्रशंसा भूरि सबनि मन मोद बढ़ायो ॥७४॥
यह सिय केर स्वभाव सतत आश्रित सुख दानी ।
याते आदर दियो सबहिं करुणा गुण खानी ॥७५॥
येही विधि रस सिन्धु राम रघुवर प्रिय रासा ।
परम अपूर्व उदार भरे आनन्द हुलासा ॥७६॥
तिन मधिघन इन्द्र कान्ति कलित क्रीड़ा कर सुठि तर ।
बिलसत परम अपूर्व दृष्ट अरु श्रुत श्री छवि धर ॥७७॥

Scanned by CamScanner

भयो अनेकन रात्रि रास नित नवल प्रकारा ।
तिन में नित नव छटा दिखाई नृपति कुमारा ।।७८।।
अद्भुत सरस अनूप रूप नित नवल दिखावत ।
अस देखा नहिं सुना कहत सखि मोद मनावत ।।७६।।
विद्या धर बर बाल विपुल मन हरन स्वरूपा ।
काम रूप नागरी सकल छवि राशि अनूपा ।।८०।।
लै पिय को निज संग रंग रँगि गगन मझारी ।
प्राणनाथ कर पकरि तहाँ नृत्यहिं सुकुमारी ।।८१।।
सखि प्रति रूप बनाय नृपति सुत सकल सखिन सँग ।
नृत्यत रसिक नरेश पगे तिन के सनेह रँग ।।८२।।
मण्डल ललित बनाय विपुल नायिका नवीनी ।
नृत्यत पिय के अंश भुजा धरि रति रस भीनी ।।८३।।
रामागण अनुकूल नवल नायक रस सागर ।
श्री रघुराज किशोर प्रेम लम्पट छवि आगर ।।८४।।
स्वर्ण रत्न मणि नगन जड़ित बर बसन विभूषण ।
पहिरे नृपति कुमार सखिन युत अति निरदूषण ।।८५।।
याते रासस्थली रत्न मय परत दिखाई ।
तारा जिमि जगमत गगन में ज्योति जगाई ।।८६।।
मुक्ता अति झलकात व्योम मोती मय दर्शत ।
नृत्यत सखि पिय संग रंग रँगि हिय अति हर्षत ।।८७।।
भू पर मधुर मयूर वृन्द आनन्द हृदय भर ।
षडजआदि स्वर सहित नटत अनुराग भरित बर ।।८८।।

Scanned by CamScanner

सरस नृत्य घन दिन्दु कारि अस नाम सोहाई।
करत पंख फैलाय मोर गण शोर मचाई ॥८९॥
परत मेघ की बुन्द मोर के ऊपर जबहीं।
नृत्यत अति आनन्द मगन बोलत प्रिय तबहीं ॥९०॥
चन्द्र चाँदिनी ललित लसत जनु अमित रत्न वर।
तेहि क्षण अम्बर केर छटा को कवि वर्णन कर ॥९१॥
रघुवर इच्छा जानि मेघ गण रास मझारी।
मधुर मृदंग सदृश्य गर्जना करत सुखारी ॥९२॥
कोइ विद्याधर सुता नेह भरि अवनि सिधाई।
श्री मैथिली समीप जाय अति विनय सुनाई ॥९३॥
कृपामयी मृदु मूर्ति रास मण्डल पग धरिये।
पिय सु वाम अँगराजि हमनि उर आनँद भरिये। ९४॥
करि वर विनय लिवाय गई सिय को सु रास में।
राजत युगल किशोर भरे हिय अति हुलास में ॥९४॥
तेहि क्षण घन इव श्याम कान्ति कर श्री रघुराई।
विद्युत द्युति जिमि लसत मैथिली सुभग सोहाई ॥९५॥
चहुँदिशि वामा वृन्द विपुल विधु वदनी वाला।
नृत्यहिं पगि अनुराग सु लोचनि सुखद निहाला ॥९६॥
तिन सब को रसपान करत रसिकेश सुघर वर।
राजिव नयन विशाल परम विकसित सनेह भर ॥९७॥
सुनि सखियन के गीत मधुर मद छके सरस तर।
गाढ़ालिंगन कीन प्रियै पिय रूप रसिक वर ॥९८॥

Scanned by CamScanner

तैसेहिं श्री मैथिली पियहिं आलिंगन करि के।
पायो अति रस स्वाद हृदय में आनँद भरि के ॥९९॥
येहि विधि दम्पति दिव्य गाढ़ आलिंगन कीने।
बिहरत "सीताशरण" रास विच गलभुज दीने ॥१००॥

दो०–मिलत परस्पर प्यार भरि, सिय पिय सने सनेह।
'सीताशरण' सु छवि निरखि, सब सखि भईं विदेह ॥२॥

येहि विधि भेंटत युगल रसिक लम्पट रस साने।
मानो मिलि इक भये परम आनन्द समाने ॥ १ ॥
वर्णत सूत सुजान हृदय में अति उमंग भर।
सुनि सखियन के गीत काम बर्धक सुन्दर वर ॥ २ ॥
नेह भरित वर नृत्य निरखि अब तक रघुनन्दन।
भये न तृप्त जनेश सुवन रस निधि जग वन्दन ॥ ३ ॥
तैसेहिं श्री मैथिली नृत्य लखि गान श्रवण कर।
अब तक भईं न तृप्त पिपासा बढ़ी अधिक तर ॥ ४ ॥
दम्पति युगल किशोर राग प्रेमी सुजान वर।
राग व्यसन से अलग होव इन को अति दुस्तर ॥ ५ ॥
नृत्यत किन्नर सुता बसन भूषण गिरि जावैं।
टटत हिय के हार पगन नूपुर खुलि जावैं ॥ ६ ॥
निज इच्छा से नवल बसन भूषण सब बाला।
धारण तन में करैं सत्य संकल्प रसाला ॥ ७ ॥
निखिल नायिका वृन्द राजनन्दन प्रिय रमनी।
लहैं दिव्य वर भोग स्त्र इच्छा पिय सुख करनी ॥ ८ ॥

शौनक मुनि वर सुनिय कहत श्री सूत सुजाना।
कर्क राशि गत सूर्य चरित इमि कृत भगवाना ॥ ९ ॥
श्री मैथिली समेत चक्रवर्ती कुमार वर।
कीन शुद्ध श्रृंगार मयी सुठि केलि मधुर तर ॥१०॥
हे भृगु कुल अवतंश विप्र वर शौनक शुचि मति।
सिय रघुवर पद प्रीति रीति वर विशद विमल अति॥११॥
यह रस अनुभव गम्य युगल प्रेमी ही पावैं।
अपर न कोइ अनुभवै कोटि विधि कष्ट उठावैं ॥१२॥

❀ सिंहार्के सिद्धकुमारी रास प्रकरणम् ❀

तत्पश्चात् किशोर परम रस बोर रसिक वर।
सर्वोत्तम नायिकन यूथ युत हिय सनेह भर ॥१३॥
प्रीतम प्राण अधार प्रियै हँसि कण्ठ लगाई।
गलबाहीं दै लसत राजनन्दन रघुराई ॥१४॥
पगे परम अनुराग परस्पर युगल सु छवि धर।
विहरत लता निकुंज मध्य कुसुमित प्रसून वर ॥१५॥
तिन पर गुंजत मधुप मधुर मन हर अति पावन।
तहँ विहरत रस पगे प्रिया प्रीतम मन भावन ॥१६॥
कबहूँ चम्पक विपिन कबहुँ केतकी सु बन में।
कमल, कवीर, रसाल विपिन में सुख लहि मन में ॥१७॥
विहरत प्रीतम प्रिया परम आनन्द समाई।
वकुल विटप वर वेलि विविधि विधि लगति सोहाई ॥१८॥

Scanned by CamScanner

थल पंकज कमनीय केंवड़ा सुठि गुलाब वर ।
इन सब की वाटिकन माहिं क्रीड़त प्रमोद भर ॥१९॥
येहि विधि करत विहार मैथिली सहित रसिक वर ।
ललित रत्न स्थली माहिं बैठे उमंग भर ॥२०॥
अतिसय सुषमा भरी स्थली सुखद सोहावन ।
मन मोहन मन रमन राजनन्दन हिय भावना ॥२१॥
चहुँदिशि राजत निकर नवल नायिका नवीनी ।
रिझवहिं युगल किशोर केलि कौतुक रस भीनी ॥२२॥
कबहुँ झुलत हिंडोल कबहुँ कन्दुक कल क्रीड़ा ।
करत विशद भरि भाव भली विधि परिहरि व्रीड़ा ॥२३॥
कबहुँ मनोहर रत्न कुन्ज मधि अति विस्तारा ।
बिछे ललित असतरन मखमली विविध प्रकारा ॥२४॥
तहँ वरवामा वृन्द सहित प्यारी सनेह पगि ।
खेलत चौपड़ खेल प्रिया छवि लखि सुरंग रँगि ॥२५॥
हारीं सखि समुदाय जीत गै रसिक सुजाना ।
विजय कीर्ति यश लाभ लह्यो पिय अति सुखमाना ॥२६॥
पुनि विदेह नन्दिनी संग खेलत हारे पिय ।
तब सब नव नायिका परम प्रमुदित अपने हिय ॥२७॥
प्रीतम परम प्रवीण प्रेम पूरित प्रणयी पर ।
सुमन सदृश उपहार चढ़ावत सुठि कटाक्ष वर ॥२८॥
करैं हास्य कमनीय बचन बोलैं विनोद भर ।
पिय तुम परम प्रवीण रसिक मन हर उदार तर ॥२९॥

Scanned by CamScanner

पर प्यारी के साथ न कुछ वश चलो तिहारो ।
हारे मुग्ध समान निपट निज हृदय बिचारो ॥३०॥
तेहि के बाद अनेक भाँति सुठि सुधा समाना ।
परम स्वाद सम्पन्न अन्न भरि थाल महाना ॥३१॥
अर्पेउ प्रीतम प्रियै सखिन हिय में उमगाई ।
पावत युगल किशोर प्रेम पगि अति सुख पाई ॥३२॥
प्रिया स्वकर लै ग्रास प्राण प्रीतमहिं पवावैं ।
तैसेहिं प्रियै पवाय प्राण वल्लभ सुख पावैं ॥३३॥
सकल नवल नायिका प्रिया युत पियै पवाई ।
पावैं पगीं सु प्यार सखी गन हिय हर्षाई ॥३४॥
येहि विधि प्रीतम प्रिया सखिन युत भोजन पाई ।
गन्ध माल सुठि पान सकल पाये उमगाई ॥३५॥
बस्त्राभरण नवीन सकल निज अंग सजावहिं ।
प्रीतम प्रिया सुजान सखिन युत आनँद पावहिं ॥३६॥
पुनि मैथिली समेत अखिनयुत राज सुवन वर ।
काँच सुमणि मय ललित दिव्य प्रासाद प्रभाकर ॥३७॥
तहँ राजत मन मुदित रसिक जीवन धन मन हर ।
सिद्ध कुमारिन दीन सु आयसु अति उमंग भर ॥३८॥
अब तुम सब सुठि रास करहु अस कहि पिय प्यारी ।
प्रविशे रासस्थली मध्य हँसि गलभुज धारी ॥३९॥
दम्पति आयसु पाय सिद्ध कन्यन हर्षाई ।
परम उच्च तर रास सरस प्रारम्भ कराई ॥४०॥

Scanned by CamScanner

त्रिविधि विनोद विलास अमल आनन्द प्रदायक।
करैं केलि कमनीय कला कुशला सब लायक ॥४१॥
तेहि सुठि रास मझार स्वयं मन्मथ समेत रति।
नृत्यति भरि अनुराग हृदय में परम विमल मति ॥४२॥
तैसेहि रति भी नटति स्वपति मन्मथ के संगा।
दोऊ परम प्रसन्न होत लखि रास प्रसंगा ॥४३॥
इमि आश्चर्य निहार मनोहर रूप रसिक वर।
श्री रघुवीर उदार लगे नृत्यन उमंग भर ॥४४॥
अति प्रसन्नता युक्त पिया सँग जनक दुलारी।
नृत्यन लगीं सनेह सनी अंशन भुज धारी ॥४५॥
जब बाढ़ेउ अति हर्ष अमित तन धरि सिय प्यारी।
नृत्यत पिय के संग रंग रँगि रति रस कारी ॥४६॥
चहुँदिशि मण्डल बाँधि प्रिया अगणित वपु धारी।
पिय अंशन भुज धारि भँवर जिमि रमत सुखारी ॥४७॥
सिद्ध कुमारिन केर रास में नव रस पावन।
तिन के भाव अनेक भाँति प्रगटे मन भावन ॥४८॥
वे सब सिद्ध कुमारि भाव भूषित छवि आगरि।
गान तान संगीत कला कुशला नव नागरि ॥४९॥
प्रीति पगीं रस रीति परम पण्डिता सयानी।
सकल सोच सँकोच रहित रस निधि गुण खानी ॥५०॥
पुनि गुणेश रसिकेश राम रघुवंश विभूषण।
रस सागर मन रमण राज नन्दन निर्दूषण ॥५१॥

प्राण प्रिया गुण शील रूप वर्णित प्रवन्ध वर ।
सरस स्वकीयन संग सुनावत सुनत मोद भर ॥५२॥
सखिगन मुदित सुनाय नवल प्यारी के गुण गण ।
गावन लागे लाल उठत अतिसय उमंग मन ॥५३॥
सुधा विनिन्दिक सरस मधुर जिनकी प्रिय बानी ।
अतिसय आनँद रूप श्रवण सुख प्रद रस सानी ॥५४॥
श्री रघुवर मन मुदित सुनत भगवान विष्णु गुन ।
श्रीलक्ष्मी गुन भनित ललित अतिसय प्रवन्ध सुन ॥५५॥
पावत अति आनन्द अपर निज समीचीन नर ।
भजन भावना मगन सुनत तिन के प्रवन्ध वर ॥५६॥
श्री शंकर भगवान केर स्तव प्रबन्ध वर ।
परम प्रेम युत सुनत राजनन्दन उदार तर ॥५७॥
हरि को हरिता दई शिवहिं शिविता जिन दीनी ।
विधि को विधिता दई कृपा एसी जिन कीनी । ५८॥
सो रघुवीर उदार इनहिं निज आश्रित जानी ।
अपनो भक्त विचारि सुनत गुण गण सुख मानी ॥५९॥
विधि हरि हर निशि दिवस सतत प्रभु को यश गावत ।
ध्यावत सीताराम पाद पंकज सुख पावत ॥६०॥
पुनि कोउ गीत रसाल जाहि कोइ गाय न पावत ।
श्री विदेह नन्दिनी स्वभाविक ही तेहि गावत ॥६१॥
निज जीवन धन प्राण मनोरम केर तेज बल ।
शौर्य्य शक्ति सौन्दर्य ओज मति माधुर्य्या भल ॥६२॥

Scanned by CamScanner

गावहिं दिव्य सु गीत ललित मन हरन ललामा ।
अयोनिजा मैथिली मोद मन्दिर छवि धामा ।।६३।।
अप्राकृता अनवद्य परात्पर शक्ति दिव्य तर ।
अपर न जेहि सम कोइ देव गन्र्ध सुता वर ।।६४।।
तत्पश्चात सुजान सिद्ध कन्यन की लीला ।
सुनिये मन चित लाय परम सुखरूप रसीला ।।६५।।
विकसे वनज विशेष विविधि विधि जल पूरित सर ।
तेहि ऊपर विस्तार सहित नृत्यत उमंग भर ।।६६।।
मन में करैं बिचार यही सब सिद्ध कुमारी ।
लखि मम गुण समुदाय परम रीझैं धनुधारी ।।६७।।
निज पद पंकज केर सतत दासी मोहिं जानी ।
करैं प्यार सब भाँति राजनन्दन निज मानी ।।६८।।
पुनि सुर बालन माहिं यथा विधि जो गुण चाही ।
पिय जानै सो सकल सिद्ध कन्यन में आही ।।६९।।
असनिज हृदय बिचारि सकल नृत्यत जल ऊपर ।
कबहुँ कमल पर नटत मोद अपने उर में भर ।।७०।।
निर्मल जल गम्भीर स्वच्छ तर सुमन तड़ागा ।
तेहि मधि क्रीड़ा कीन सबनि ने भरि अनुरागा ।।७१।।
कबहुँ बृक्ष पर नृत्य करत आनन्द समाई ।
लखि दर्शक गण मुदित हृदय जय-जय ध्वनि लाई ।।७२।।
श्री मैथिली समेत सकल सखि साधु-साधु कहि ।
आदर तिनको दियो हृदय में अतिसय सुख लहि ।।७३।।

Scanned by CamScanner

पुनि पृथ्वी पर आय सकल नृत्यत हर्षाई।
बहुरि वृक्ष पर जाय लगीं नृत्यन सुखपाई ॥७४॥
फिर अवनी तल आय नटैं पुनि विविध वृक्ष पर।
नृत्यहिं सिद्ध कुमारि मोद अपने उर में भर ॥७५॥
ललित लतन पर नटत कबहुँ नृत्यत सर माहीं।
जल के अन्दर करत केलि कौतुक हर्षाहीं ॥७६॥
कारण येहि में एक सिद्ध कन्या ये सारी।
तेहि ते बहुबिधि करत कला कौशल विस्तारी ॥७७॥
करि क्रीड़ा कमनीय प्रिया प्रीतमहिं रिझावहिं।
रीझैं "सीताशरण" स्वयं हिय अति सुख पावहिं ॥७८॥
कबहुँ कोकिलन संग रंग भरि स्वस्वर मिलावत।
गावत भरी सनेह कबहुँ जल बीच लखावत ॥७९॥
कबहुँ यहाँ की केलि त्यागि नीलाचल ऊपर।
जाकर क्रीड़ा करैं बहुरि आवैं अवनी पर ॥८०॥
अति ऊँचे प्रासाद कलश नृत्यत कहुँ तिन पर।
कहुँ महलन में नटत विपुल उत्साह हृदय भर ॥८१॥
जहँ पारावत आदि अपर पक्षी समुदाई।
बैठत महलन माहिं तहाँ नृत्यत हर्षाई ॥८२॥
येहि विधि सिद्ध कुमारि करत क्रीड़ा सुखदाई।
प्रीतम प्रिया समक्ष अनत मन भूलि न जाई ॥८३॥
करि बहु केलि कलोल दोउन को चित्त रमायो।
निज गुण गण प्रगटाय परम रस स्वाद करायो ॥८४॥

लखि तिन की वर केलि कला कुशलता अपारा ।
अतिसय भये प्रसन्न प्रिया युत नृपति कुमारा ॥८५॥
येहि विधि लीला होत कदा दिन में जल वर्षत ।
भीजत लता सु विटप विपिन विहरत पिय हर्षत ॥८६॥
गज पद नख के चिन्ह बने तिन पर हँसि धावत ।
करि लीला कमनीय सखिन युत प्रियै हँसावत ॥८७॥
होवत परम प्रसन्न स्वयं सब को प्रसन्न करि ।
पावत परमानन्द राजनन्दन उमंग भरि ॥८८॥
बर्षा में जब दौरि चलत रसिकेश सुघर वर ।
गजगामिनि मैथिली आदि सब सखि प्रवीण तर ॥८९॥
चलि न सकहिं पिय संग सकल रमणी सुकुमारी ।
भीजे तन के बसन सकल बर्षेउ जब बारी ॥९०॥
याते नहिं चलि सकहिं जोर से प्राण पियारी ।
प्राणनाथ हर्षाय प्रिया कर पकरि सुखारी ॥९१॥
कोठा पर लै गये चतुर चूड़ामणि छवि धर ।
नृप कुमार चितचोर चपल रस निधि सनेह घर ॥९२॥
कोमलाङ्गी प्रिया अंग द्युति अति मनहारी ।
विद्युत सम कमनीम जाहि लखि रास विहारी ॥९३॥
अतिसय प्रेम बिभोर बने प्यारी के वश नित ।
संतत रहत अधीन राजनन्दन उदार चित ॥९४॥
महलन ऊपर गये युगल मिलि दै गलबाहीं ।
नदिन प्रवाह दिखाय प्रियै पिय हिय हर्षाहीं ॥९५॥

Scanned by CamScanner

पुनि घन माला केर तीव्र तर वृष्टि दिखावत ।
हँसि हँसाय रसिकेश सखिन युत अति सुख पावत ॥९६॥
ऐसेहिं लीला करत दिवस बीत्यो निशि आई ।
चमकत बहु खद्योत वृन्द निरखत हर्षाई ॥९७॥
प्राण प्रिया लखि तिनहिं कहैं हे प्राण अधारे ।
चमकत बहु खद्योत लखो जीवन धन प्यारे ॥९८॥
सुनि बोले पिय ठीक अहै तुम्हरी प्रिय बानी ।
पर अब "सीताशरण" सुनहु जो मम मन आनी ।९९॥

दो०—प्राण प्रिये खद्योत मिस, सूचित होवत बात ।
तव मुख विमल मयंक ज्यों, "सीताशरण" लखात ॥३॥

अपर विपुल वरवाम सु मुख खद्योत सदृश प्रिय ।
निशि में परत दिखाय बिचारो मैं अपने हिय ॥ १ ॥
इमि लखि-लखि खद्योत चक्रवर्ती कुमार वर ।
प्राण प्रियै अह्लाद देत सज्जन प्रमोद कर ॥ २ ॥
प्रिय परिकर समुदाय विविधि वर वाद्य बजावहिं ।
वीणा, वंशी, वेणु, मुरलिका टेर सुनावहिं ॥ ३ ॥
अपर अनेक सु वाद्य मोद भरि सखी बजावत ।
तदनुकूल वर गीत सिद्ध कन्या गण गावत ॥ ४ ॥
इन सब को वर गान तान संगीत कला प्रिया ।
सुनत सनेह समेत राजनन्दन उदार हिय ॥ ५ ॥
सुठि मृदंग वर नाद प्रेम से सुनत रसिक वर ।
निज सु अंग की कान्ति प्रकाशित करत मोद भर ॥ ६ ॥

Scanned by CamScanner

यदपि अँधेरी रैनि तदपि जनु पूरण मासी ।
सदृश रही जनाय पिया तन ज्योति प्रकाशी ।। ७ ।।
होवत प्रातः काल सखिन युत प्रीतम प्यारी ।
करत मुदित स्नान केलि कौतुक बिस्तारी ।। ८ ।।
भूषण बसन नबीन उचित अंगन में धारत ।
नख सिख सुभग शृंगार सखी दोउ केर सँवारत ।। ६ ।।
प्राण प्रिया के संग रंग भरि सखिन समेता ।
षट रस भोजन करत भक्ष्य अरु भोज्य सचेता ।।१०।।
निज कर प्रियै पवाय प्रिया कर से पिय पावत ।
हँसि-हँसि सखिन पवाय सबनि मन मोद बढ़ावत ।।११।।
देत परम सुख स्वाद सबहिं चित चोर छबीले ।
निरखत भरे सनेह युगल गुण गण गर्बीले ।।१२।।
याही से श्री राम भद्र असनाम सोहावन ।
परम सार्थक होत सकल हिय रस बर्षावन ।।१३।।
बोलत सूत सुजान सुनिय हे शौनक मुनि वर ।
भाद्र मास तक केर कही मैं केलि मधुर तर ।।१४।।
गुरुवर श्री मद्व्यास देव मुख मैं सुनि भाई ।
यथा बुद्धि मैं कही कछुक कल केलि सोहाई ।।१५।।
श्री सिय पिय रस पगे रहत जे रसिक सुजाना ।
नित कहँ यह वर केलि सुखद सुठि सुधासमाना ।।१६।।
हिय में भरि अनुराग उनहिं सर्वदा सुनाइय ।
सिय पिय प्रेमिन केर हृदय में रस सरसाइय ।।१७।।

Scanned by CamScanner

नाना कर्मन माहिं सतत जाको चित सानो ।
सिय पिय पद नहिं प्रेम होय किन परम सयानो ॥१८॥
निज तन को किन होय बन्धु सुत पितु अरु माता ।
स्वजन सनेही मित्र सुभग रमणी सुख दाता ॥१९॥
सिय पिय प्रेम बिहीन तिनहिं यह रहस न कहिये ।
रसिक सनेहिन मध्य कथा कहि अति सुख लहिये ॥२०॥
सोई रसिक सुजान सदा ही जाको मन चित ।
बुद्धि लगै सियराम चरण पंकज में प्रमुदित ॥२१॥
तजि जग के सुख स्वाद सिया रघुवर पद सेवै ।
अखिल लोक ऐश्वर्य काहिं त्रण सम तजि देवै ॥२२॥
जाके श्रवण समुद्र सरिस कबहूँ न अघाने ।
सुनत बिहार चरित्र सतत हिय में सुख माने ॥२३॥
लोकोत्तर कल्याण सुलभ तिन को जिय जानो ।
चाहे होवै अज्ञ चहे हो परम सयानो ॥२४॥

❀ कन्यार्के राजकन्या रास प्रकरणम् ❀

बहुरि अमित जिव भाव भूमि रस निधि रघुनन्दन ।
प्रेमिन प्राण अधार रास लम्पट जग वन्दन ॥२५॥
प्राणिमात्र के अखिल भाव ग्राहक रस सागर ।
"सीताशरण" सुजान शील निधि नित नव नागर ॥२६॥
कन्या राशि के भानु निरखि श्रीराम रसिक वर ।
बोले कण्ठ लगाय प्रिया को हिय उमंग भर ॥२७॥

हे मम जीवन मूरि सकल सुख खानि उदारा ।
मम हितरत सर्वदा भरीं हिय भाव अपारा ॥२८॥
आयो आश्विन मास रावरी आयसु पाई ।
रास करैं उमगाय राजकन्या समुदाई ॥२९॥
अस मम हिय अभिलाष कृपा करि पूरण कीजिय ।
प्रेमामृत सुख खानि मोहिं निज रस सुख दीजिय ॥३०॥
सुनि पिय के इमि बचन रचन अति प्यार समाये ।
श्री मिथिलाधिप लली उमगि प्रीतम उर लाये ॥३१॥
विकसित जलज समान नयन सुख प्रद मन भावन ।
अति प्रसन्न मैथिली बचन बोली प्रिय पावन ॥३२॥
पिय मन अस अभिलाप राज कन्या समुदाई ।
करैं रास कमनीय राग रागिनि प्रगटाई ॥३३॥
याते हिय उमगाय सकल मम आयसु मानी ।
पियहिं देहु सुखस्वाद रास करि रति रस सानी ॥३४॥
हम सब के सर्वस्व भूतप्रिय चक्रवर्ति सुत ।
नायक नवल किशोर स्वजन सुख कर सनेह युत ॥३५॥
कीजै इनहिं प्रसन्न सरस रस राम दिखाई ।
रमि रमाय पिय संग देहु सुख स्वाद सिहाई ॥३६॥
एक स्वामिनि संकेत मिलो पुनि सब नृप बाला ।
पिय को सर्वस मानि जियैं लखि रूपरसाला ॥३७॥
क्षण भर पिय बिन रहन चहै नहिं कोइ सुकुमारी ।
प्रीतम चरण सरोज निरखि सब रहैं सुखारी ॥३८॥

Scanned by CamScanner

सब के हृदय मझार पिया को प्रेम अपारा।
परम स्वतन्त्र समर्थ नृपति सुत रूप उदारा ॥३९॥
परम कुशाग्र सु बुद्धिमान रघुराज कुँवर वर।
अखिल योग्य वर कर्म निरत सुन्दर सु शील तर ॥४०॥
अन्य धर्म सब त्यागि सकृत उज्वल रस पागे।
निरखत अति आशक्त बने मन में अनुरागे ॥४१॥
केवल क्रीड़ा पगे अन्य कोइ धर्म न देखत।
सर्वोपरि गुनि रास सतत प्रमुदित हिय पेखत ॥४२॥
यह तो धर्म विरोध कहै ऐसा यदि कोई।
अनर्थ कारी अहै सुनै मनचित दै सोई ॥४३॥
सर्वेश्वर श्रीराम रास लम्पट रस सागर।
यावत अखिल बिभूति विभव कर विश्व उजागर ॥४४॥
धर्म साध्य नहिं कोइ स्वभाविक प्रभु रुचि पाई।
प्रगटैं अवसर पाय नित्य रस रूप सदाई ॥४५॥
तब चरणाश्रित भक्त वृन्द जग में जो आहीं।
वेही सकल विभूति धर्म से पावत नाहीं ॥४६॥
तुम्हरी कृपा प्रसाद स्वभाविक ही सब पावत।
पगे परम अनुराग सतत तुमहीं को ध्यावत ॥४७॥
याते सकल विभूति स्वभाविक प्रभु की दासी।
जो अनन्त अखिलेश सकल प्रेरक सब बासी। ४८॥
परम स्वतन्त्र समर्थ सदा ही जो सब लायक।
जाके रहत अधीन धर्म अरु कर्म विधायक ॥४९॥

Scanned by CamScanner

धर्म कर्म आधीन कदा नाहिन रघुनन्दन ।
पालक पावन प्रेम प्रीति पूरक जग वन्दन ॥५०॥
निजानन्द में मगन निरन्तर रहत रसिक वर ।
धर्म साध्य फल पुण्य कीर्ति तेहि के प्रकाश कर ॥५१॥
परमैकान्तिक भक्त स्वकीया भाव समाने ।
तिनके सँग नित करत केलि पिय अति रस साने ॥५२॥
सोइ हिय नित अनुभवै मधुर रति रास रसाला ।
अपर न कोई पाय सकै कबहूँ केहु काला ॥५३॥
परब्रह्म श्रीराम अखिल जग जीव प्रकाशक ।
भावुक भरे सुभाव हृदय वर कमल विकाशक ॥५४॥
जाकी सत्ता पाय असुर सुर नर मुनि हरि हर ।
करत जगत व्यवहार परस्पर अति सचेत उर ॥५५॥
धर्म, कर्म, विज्ञान, मुक्ति जाके आधीना ।
सोइ रघुराज किशोर रसिक मणि परम प्रवीना ॥५६॥
स्वाभाविक स्वानन्द मगन नित रस निधि रघुवर ।
करत केलि कमनीय रास लीला प्रमोद भर ॥५७॥
धर्म, कर्म, को त्यागि सतत निशिवासर छवि धर ।
सेवत सहित सनेह निरन्तर अति उदार तर ॥५८॥
जाको श्रुति भगवती परम रस रूप बतावै ।
रमत परिकरन संग तिनहिं निज अंग रमावै ॥५९॥
रस के भेद अनेक तदपि शृंगार मुख्य तर ।
अपर सकल रस गौण वदत रस विज्ञ सुजन वर ॥६०॥

Scanned by CamScanner

पति पत्नी सम्बन्ध भाव भूषित परिकर पिय।
पावत परमानन्द परस्पर रमत उमगि हिय ॥६१॥
येही नित्यानन्द स्वभाविक अपर स्वाद वर।
आगन्तुक अति निरस लगत फीके न मोद कर ॥६२॥
याही से तजि अपर स्वाद सुख नित रघुनन्दन।
रमत नायिकन संग रंग भरि प्रभु जग वन्दन ॥६३॥
वर्णत सूत सुजान धर्म बाधक नहिं रासा।
प्रत्युत ब्रह्म स्वरूप स्वभाविक रास विलासा ॥६४॥
सेवनीय सर्वदा निरन्तर मधुर रास रस।
रघुनन्दनहिं बताय लगे वर्णन उज्वल यस ॥६५॥
श्री रसिकेश निदेश पाय सब राजकुमारी।
पहिरे भूषण बसन अपर सुन्दर मन हारी ॥६६॥
पुनि जीवन धन लाल काहिं वर बसन बिभूषन।
पहिराये हर्षाय सखिन नख सिख निदूषन ॥६७॥
तैसेहिं श्री मैथिली नवल वर ललित शृँगारा।
नख सिख परम अनूप मनोहर सखिन सँवारा ॥६८॥
येहि विधि सकल समाज सुसज्जित करि रसिकेश्वर।
कुमुद सु विपिन मझार सबहिं लै गये सुछवि धर ॥६९॥
रति रस लम्पट लाल तहाँ वर विपुल विलासा।
लागे पगि अनुराग करन हिय भरित हुलासा ॥७०॥
सब नृप बालन मध्य लसत स्थित सुषमा कर।
दिव्य मधुर मन रमन मंजु मूरति अनूप तर ॥७१॥

Scanned by CamScanner

मानो निज कामना सहित मन्मथ सु दिव्य तर।
मंजुल मूर्ति बनाय परल बिलसत सनेह भर।।७२।।
जबहिं भयो प्रारम्भ रास सित पंकज मन हर।
फूलि उठे एक साथ सकल पिय मन प्रमोद कर।।७३।।
चारु चमेली, जुही, केतकी, परम सोहावन।
ललित निवारी आदि खिली वेला मन भावन।।७४।।
अपर जिते सित पुष्प सकल खिल गये सिहाई।
शर्द समय अनुरूप चन्द्र चाँदिनि छिटकाई।।७५।।
पुष्पन युत सब लता चाँदिनी माहिं सोहावैं।
झूमि-झूमि मन मुदित सकल विटपन लपटावैं।।७६।।
विपुल चकोर निशेश निरखि नव नेह बढ़ाई।
सुछवि सुधा रस पान करैं आनन्द समाई।।७७।।
विटप विपुल मधु श्रवहिं सुमन की झरी लगाई।
सरिता लखि रस रास मगन विथकित सुख पाई।।७८।।
भो प्रवाह तब बन्द मृगी मृग घास न खावैं।
तजि निद्रा सुनि गीत खड़े अति आनँद पावैं।।७९।।
जड़वत सब हो रहे बिपुल पत्ती गण सारे।
परम मौन बनि सुनत लहत मन मोद अपारे।।८०।।
वर्णत सूत सुजान परम आनन्द समाये।
विलसत पत्ती वृन्द देह की सुरति भुलाये।।८१।।
बैठे पूरित प्रेम रास रस छकि हर्षाई।
मानो साक्षी भूत अपनपौ रहे भुलाई।।८२।।

Scanned by CamScanner

को हम क्या कर्त्तव्य ज्ञान नहिं अस सुख पाये ।
युगल माधुरी मगन एक टक पलक न लाये ॥८३॥
सर वर बिकसित बनज विपुल विधि सुभग सोहावन ।
तिन पर गुंजत मधुप मधुर मंजुल मन भावन ॥८४॥
निशिपति अरुदिन नाथ आदि ग्रह तजि निज रासी ।
अपर रासि पर भये सु स्थित हृदय हुलासी ॥८५॥
रासानन्द विभोर देह की सुरति भुलाये ।
युगल सु छवि रस पान करत हिय मधि हर्षाये ॥८६॥
यदपि नवग्रह केर वितक्रम दोष दुखत अति ।
तद्यपि रासानन्द भयो अति सुखद सरस मति ॥८७॥
रासामृत को स्वाद पाय पाषाण आदि बहु ।
द्रवी भूत हो गये सु चेतन दशा कवन कहु ॥८८।
नृत्यहिं रास मझार नवल नायिका मोद भरि ।
गावहिं रस मय गान तान संगीत कला करि ॥८९॥
कटि किंकिणि कमनीय करन कंकण झनकारत ।
वाहँ बिजायट बिमल सु नूपुर शब्द उचारत ॥९०॥
लसत ललित मंजीर सखिन के हार शब्द कर ।
बाजत मधुर मृदंग चंग बहु वाद्य सुखद वर ॥९१॥
सुधा सरिस प्रिय मधुर मंजु वर गीत सरस तर ।
गावहिं नव नायिका वीण बाजत प्रमोद कर ॥९२॥
सुठि सखियन के शब्द अमित कोकिला लजावन ।
चरों दिशि भरिं पूरि रहेउ अतिसय मन भावन ॥९३॥

Scanned by CamScanner

येहि विधि सो सुख स्वाद सुधा रघुवर उर माहीं।
उमड़ी घटा अनूप बनत वर्णत सो नाहीं ॥६४॥
सिय युत सखियन तथा अपर भक्तन हिय बर्षी।
अद्यावधि पर्यंत स्वाद लहि मति अति हर्षी ॥६५॥
पुनि भविष्य में भक्त वृन्द जो चिन्तन करिहैं।
तेऊ सोइ सुख स्वाद पाय हिय आनँद भरिहैं ॥६६॥
चतुर्व्यूह सुख रूप वासुदेवादि परेशा।
तिन सब के भी ईश राम रघुवर रसिकेशा ॥६७॥
जिन को रासानन्द सुधा सागर सम जानो।
चतर्ब्यूह सुख स्वाद एक कण सम अनुमानो ॥६८॥
सत् चित् आनन्द रूप नित्य सर्वदा एक रस।
रघुनन्दन को रास सुधा सागर उदार यस ॥६९॥
समीचीन वर पुरुष योग्य सिय पिय रस रासा।
ध्यावत "सीताशरण" हृदय विच भरत हुलासा १००॥

दो०–परम उपास्य सनेह निधि, सिय पिय सुषमागार।
मृदुचित्त सरल स्वभाव अति, "सीताशरण" अधार ॥४॥

सकल सुकृत को सुफल रास रस केलि मधुर तर।
जहँ विहरत मैथिली रमण रसिकेश सुघर वर ॥ १ ॥
श्रेष्ठ पुरुष जग माहिं सबनि के योग्य परम प्रिय।
अखिल जीव भजनीय श्याम सुन्दर उदार हिय ॥ २ ॥
श्री रघुराज किशोर चतुर्चूड़ामणि छवि धर।
सत् चित् आनँद रूप रास रसिया प्रमोद कर ॥ ३ ॥

Scanned by CamScanner

अति अनन्यता युक्त भजत ही मिलत सिहाई ।
तिनके पीछे चलत ज्ञान वैराग सदाई ॥ ४ ॥
कहि येहि विधि वर वैन सूत पुनि वर्णन लागे ।
युगल केलि कमनीय निरखि हिय अति अनुरागे ॥ ५ ॥
सखियन दै निज सपथ प्राण जीवन धन बोले ।
प्यार भरे मन हरन सरस मृदु वचन अमोले ॥ ६ ॥
सब को मेरी सपथ करो अब आसव पाना ।
परम नेह दर्शाय सबनि को रसिक सुजाना ॥ ७ ॥
मृदु हँसि कण्ठ लगाय मुदित दृग दृगन मिलाई ।
निज कर कंज सिहाय सु आसव दीन पियाई ॥ ८ ॥
यद्यपि सब सहचरी रास रस पी मतवारी ।
अपर बात नहिं रुचै तदपि पिय रास विहारी ॥ ९ ॥
सकल नवल नायिकन प्रेम पगि आसव पाना ।
कर वायो दै सपथ स्वकर रसिकेश सुजाना ॥१०॥
तिन के मंजुल मधुर मनोहर प्रिय कटाक्ष वर ।
पान करत हृदयेश प्राण वल्लभ उदार तर ॥११॥
बिन ही आसव पिये भये अतिसय मतवारे ।
राजकिशोर रसज्ञ रूप रसिया सुकुमारे ॥१२॥
विपुल नवल वर वाम कामिनी कला कुशल अति ।
पगीं पिया के प्यार प्रेम पूरित निर्मल मति ॥१३॥
तिनके कलित कटाक्ष सुधा सब पियत दुलारे ।
सखियन जीवन प्राण सिया वल्लभ मन हारे ॥१४॥

Scanned by CamScanner

मातु पिता गुरु दत्त बोध अवरोध होन डर।
श्री मैथिली न प्रियैं सु आसव तब प्रवीण तर ॥१५॥
प्रीतम रसिक नरेश प्यार युत अंक बिठाई।
प्रमुदित कण्ठ लगाय आपनी सपथ दिबाई ॥१६॥
अति अनुराग समेत प्रिया को स्वकर पियावत।
जीवन प्राण अधार हर्षि हँसि गर लपटावत ॥१७॥
शुचि सुन्दरमैरेय पिया कर पी सिय प्यारी।
लपटीं पिय के कण्ठ हृदय पावत सुख भारी ॥१८॥
सुर निर्मित मैरेय परम आनन्द प्रदायक।
सकल अशुचिता रहित दिव्य तर पिय हिय भायक ॥१९॥
बर्धक रास बिलास हास रस स्वाद करावनि।
सिय पिय आनँद दानि परम रस मय अति पावनि ॥२०॥
करि सब आसव पान राजकन्या मतवारी।
पिय सों बोलहिं बचन व्यंग अति रति रस कारी ॥२१॥
सब विधि दूषण रहित यदपि पिय रूप उदारा।
तदपि बतावहिं दोष अनेकन अमित प्रकारा ॥२२॥
ये सब निज वश में न जानि अस राजदुलारे।
सुनि तिन के कटु बैन हँसत पिय परम सुखारे ॥२३॥
पुनि करि यत्न अनेक सबनि मन मोद बढ़ावत।
लखि तिनकी कल केलि स्वयं हिय में हर्षावत ॥२४॥
आसव रस वश सकल अपनपौ ज्ञान भुलाईं।
मैं किस की हूँ कौन कहाँ से यहाँ सिधाईं ॥२५॥

Scanned by CamScanner

केवल अस मन गुनै हमारे प्राण पियारे।
मनुष्य लोक मझार सकल गुण शील उजारे ॥२६॥
रूप अनूप अपार अमित मन्मथ मद मर्दन।
रसिक शिरोमणि श्याम सतत मम हिय सुख बर्धन ॥२७॥
जीवन प्राण अधार मनोहर भोग्य हमारे।
पर मो कहँ तजि गये अपर तिय ढिग सुकुमारे ॥२८॥
करि वामें अनुराग हमारी याद भुलाई।
अब देवैं हम छोड़ि उनहिं लखि अति कुटिलाई ॥२६॥
ऐसी शंका करन योग्य नहिं ते सब वामा।
यह पिय की चातुरी सु आसव को परिणामा ॥३०॥
यथा दुराशय युक्त नायिका शंका करई।
तथा अशंका करैं सकल कछु सूझ न परहीं ॥३१॥
यह भी एक आनन्द याहि देखन हित प्यारे।
आसव दियो पियाय सबनि को राजदुलारे ॥३२॥
अखिल नारि नर केर चित्त कर्षक पिय रूपा।
सब विधि सुषमा सदन मदन मद हरन अनूपा ॥३३॥
तिन में इतनहिं लखैं ज्ञान से सब नृप वाला।
बोलैं व्यंग सु बचन परम मन हरन रसाला ॥३४॥
जैसे पहिले कहे बचन हो अति मतवारी।
हो तुम चोर महान अपर को चित धन हारी ॥३५॥
यह अच्छा नहिं काम अपर तिय ढिग तुम गमने।
निज रस रंग रँगाय रँगे सुधि पाई हमने ॥३६॥

Scanned by CamScanner

किियो वाहि स्पर्श आपने प्राण पियारे।
अब जाओ तेहि पास जहाँ सुख लहो अपारे ॥३७॥
हम अति अहैं अनन्य पुरुष जो अपर तिया को।
करै जाय स्पर्श लहन सुख स्वाद हिया को।।३८॥
तेहि न करैं स्पर्श सुव्रत यह अहै हमारो।
याते जीवन प्राण आप अब अनत सिधारो॥३९॥
रँगो अपर अनुराग माहिं अब तुम्हरो मन चित।
अति चंचल हो रहा जाइये तेहि ढिग प्रमुदित॥४०॥
भला कहिय प्राणेश अहैं हम सब मृग नयनी।
सीधी सरल स्वभाव परम भोरी पिक नयनी॥४१॥
दियो हमनि विश्वास अपर तिय पास सिधारे।
ऐसी ठगई करत लाज नहिं लगत पियारे॥४२॥
तियन बांचना करत दया उर में नहिं आवति।
रसिकेश्वर कहलाय कुटिलता तजी न जावत॥४३॥
यदपि रसिक शिरताज तदपि रस स्वाद न जानो।
कैसे अति सुख लहो करत नित निज मन मानो॥४४॥
याको तुमहिं न ज्ञान याहि से हमनि त्यागि के।
अन्य तिया ढिग जात वाहि रस रंग पागि के॥४५॥
देवत परमानन्द वाहि निज अंग रमाई।
शुक ज्यों तुम्हरी वृत्ति भली विधि हम लखि पाई॥४६॥
तुमहिं न शोभा देति वृत्ति यह ठीक न प्यारे।
तुम उदार मन रमन राजनन्दन सुकुमारे॥४७॥

Scanned by CamScanner

एक फलहिं शुक काटि छोड़ि पुनि दूसर पासा ।
उड़ि जावत अति शीघ्र हृदय भरि परम हुलासा ॥४८॥
वहुरि लखत नहिं वाहि क्रिया तुम ने सोइ कीनी ।
पहिले हम सब केर चित्त मन बुधि हर लीनी ॥४६॥
लता रूप नायिका पुरुष भुक्ता जिमि मधुकर ।
तथा आप की वृत्ति अहै हे रूप रसिक वर ॥५०॥
यथा भ्रमर नहिं एक सुमन से नेह निबाहै ।
सकल सुमन के स्वाद लेन रुचि जिय में चाहै ॥५१॥
पीकर सरस मरन्द एक तजि दूसर पाहीं ।
उड़त तृतिय ढिग जात मोद मानत मन माहीं ॥५२॥
तजि वह भी वर सुमन अन्य के पास सिधाई ।
पान करत मकरन्द मंजु मन में ललचाई ॥५३॥
तैसेइ जीवन प्राण आप नर नाथ कुवर वर ।
एक तिया को त्यागि अन्य ढिग जात मोद भर ॥५४॥
यह तव चपल स्वभाव निरखि कोई वर वाला ।
किमि करिहैं विश्वास कहिय हे रूप रसाला ॥५५॥
अवलन हिय वेदना आप नहिं जानत प्यारे ।
चाहे आरत भाव कोटि विधि तुमहिं पुकारे ॥५६॥
निज दुख तुम से कहै तदपि हिय भाव शून्य तुम ।
तनक न करत बिचार खूब जाना निज मन हम ॥५७॥
परम जितेन्द्रिय पुरुष होय तेहि सुन्दर नारी ।
वर बश चित करि छोभ स्वबश करि होत सुखारी ॥५८॥

हम सब सुषमा सदन विपुल विधु बदनी वाला ।
सकल कला गुण खानि सुभग तर रूप रसाला ॥५६॥
नवल किशोरी वयस सकल विधि बनी तुम्हारी ।
सर्वस अर्पण कीन आप को हे धनु धारी ॥६०॥
तदपि न निज वश तुमहिं सकीं करि हे मन हारे ।
अस तव निठुर स्वभाव यदपि रस रूप उजारे ॥६१॥
प्रीतम तव गुण रूप मनोहर मधुर उदारा ।
प्रेमिन प्रेम पियूष दान सुख पुंज अपारा ॥६२॥
जाको देखत मात्र नायिका तन मन वारी ।
होवत अति वेहोश देह की सुरति विसारी ॥६३॥
अवलन की क्या बात शुष्क पाषान महाना ।
द्रवी भूत हो जात निरखि तव रूप सुजाना ॥६४॥
पवि सम हृदय कठोर पुरुष तव सु छवि निहारी ।
तिय वनि रमि तव संग चहत हिय होन सुखारी ॥६५॥
यथा सुयोगी सिद्ध सबनि को स्ववश बनावत ।
तथा निरखि तव रूप फसत कोउ पार न पावत ॥६६॥
सब योगिन के ईश आप सब भाँति सुघर वर ।
हृदय कमल में ध्यान करन के योग्य मधुर तर ॥६७॥
पर तुम्हरे गुण रूप व्यर्थ हे राज दुलारे ।
हमनि न आनँद दियो विचारिय प्राण पियारे ॥६८॥
केवल अवलन मान भंग हित तुम्हरो रूपा ।
यद्यपि सुषमा सदन अहै सब भाँति अनूपा ॥६९॥

Scanned by CamScanner

यथा धूर्त कृत काम कठिन माया दुख दाई ।
जन को मोहित करति लेति तेहि स्ववश बनाई ।।७०।।
तथा रसिक शिर मौर आप को रूप उदारा ।
वंचक हमको भयो सुखद नहिं नृपति कुमारा ।।७१।।
निकर किशोरी वयस प्रणय रस भरित कुमारी ।
कहि कहि बचन कठोर भरीं आमर्ष अपारी ।।७२।।
कण्ठ भुजा हिय चरण पिया पर करैं प्रहारा ।
पिय के भूषण बसन छीनि निज करैं शृंगारा ।।७३।।
लखि येहि भाँति बिनोद प्रणय रस केलि मधुर तर ।
प्रीतम प्राणाधार प्रिया मैंथिली मोद कर ।।७४।।
अन्तरहित हो गईं त्यागि सब सुभग समाजा ।
घबराये चित चोर प्राण वल्लभ रघुराजा ।।७५।।
अमल कमल दल नमन श्याम सुन्दर सुशील तर ।
अन्वेषत बहु भाँति दुखित हिय रूप सु छवि धर ।।७६।।
करि हारे बहु यत्न मिलीं नहिं प्राण पियारी ।
लागे करन विलाप राज नन्दन मन हारी ।।७७।।
हे मम जीवन मूरि मैथिली परम पियारी ।
प्राणाधार हमार कहाँ हो जनक दुलारी ।।७८।।
हे सीते सुखरूप आपका मैं सब भाँती ।
तुम हमार सर्वस्व तुमहिं लखि शीतल छाती ।।७९।।
मेरो मन चित चोरि छिपी कहँ प्राण पियारी ।
क्यों मोते भइ दूर कृपामयि रूप उजारी ।।८०।।

Scanned by CamScanner

क्यों नाहिन ले जात प्रिया यह प्राण हमारे ।
मम प्राणन ईश्वरी तुम्हीं हम तन मन वारे ।।८१।।
जहँ तुम गईं सिधार वहीं आतमा हमारी ।
लै जाइय किन साथ कृपा करि राजदुलारी ।।८२।।
हे प्राणाधिक प्रिये आप सर्वस्व हमारी ।
अन्तरहित हो गईं हमारी सुरति बिसारी ।।८३।।
तब हम सब विधि शून्य रहैं केहि लगि जग माहीं।
हम करिहैं क्या काम जियब मेरो भल नाहीं ।।८४।।
तुम्हरे विषम वियोग आज ही नाश हमारो ।
निश्चय होवै प्रिया आपने हृदय बिचारो ।।८५।।
तब क्या होवै कीर्ति आप की जग में भारी ।
होवैगा बड़ अयश बिचारिय राज दुलारी ।।८६।।
अस्तु कृपा मयि मूर्ति सरस चित प्राण पियारी ।
दै निज दर्शन प्रगटि वेगि मोहिं करिय सुखारी ।।८७।।
येहि विधि विषम वियोग भरित सुनि पिय वर बानी ।
नव नीतहु से सरस चित्त मैथिली सयानी ।।८८।।
प्रगटीं हिय भरि भाव जहाँ पिय चक्रवर्ति सुत ।
भेटीं कण्ठ लगाय सजन को हिय उमंग युत ।।८९।।
सिय सर्वस्व विभूति प्राण वल्लभ नव नायक ।
रसिया रसिक नरेश स्वजन मन हर सब लायक ।।९०।।
सादर हृदय लगाय पियै अतिसय सुख दीना ।
विषम वियोग विपत्ति मन्द हँसि के हरि लीना ।।९१।।

पुनि दोउ प्रीतम प्रिया परस्पर परम प्रेम पगि ।
सिंहासन पर लसत मन्द हँसि हँसि सु कण्ठ लगि ॥९२॥
सिय ने हिय हर्षाय पियै निज हृदय लगाई ।
दृग सों दृगन मिलाय नेह युत वयन सुनाई ॥९३॥
सरस कपोलन चूमि शोक श्रम दूर भगाई ।
दियो परम आनन्द आपने रंग रँगाई ॥९४॥
प्रगट मैथिली देखि सकल सखि अति हर्षाईं ।
आईं निकट प्रसन्न वदन आनन्द समाईं ॥९५॥
सिय के अन्तर ध्यान शोक ने दशा सुधारी ।
उतरेउ आसव रंग भईं तब सकल सुखारी ॥९६॥
प्रीति पगीं कर जोरि सकल युग रूप माधुरी ।
पियैं सहचरी वृन्द निकर गुण गण उजागरी ॥९७॥
सुन्दरता के एक मात्र वर पात्र युगल वर ।
श्री सिय श्याम सुजान रसिक वल्लभ उदार तर ॥९८॥
तिनके गुण गण नवल अमल सब राज कुमारी ।
गावैं सहित सनेह हृदय भरि भाव अपारी ॥९९॥
श्री मैथिली स्वभाव शील गुण केर बड़ाई ।
करैं सहचरी वृन्द हृदय में मोद समाई ।१००॥

दो०-पिय ने प्रथमहिं सखिन को, प्रमुदित आयसु दीन ।
"सीताशरण" सनेह युत, तिन निज शिर धरि लीन ॥५॥

याते हिय हर्षाय सकल सहचरी सयानी ।
गावहिं स्वामिनि रूप शील गुण रस मय बानी ॥ १ ॥

Scanned by CamScanner

सुनि तिनको वर गान तान मैथिली मुदित उर ।
मृगलोचनि निज सखिन सुआयसु दीन सुखद वर ॥ २ ॥
पिय को रूप स्वभाव शील गुण तुम सब गाओ ।
जीवन प्राण अधार काहिं सब भाँति रिझाओ ॥ ३ ॥
सब गौराङ्गी सखीं सुभग कंचन सम देही ।
सरस सुगन्धन सदन पिया पद परम सनेही ॥ ४ ॥
प्रिया सु आयसु पाय सकल जग जीवन धन पिय ।
चक्रवर्ति नृप सुवन भुवन भूषन उदार हिय ॥ ५ ॥
तिन को शील स्वभाव रूप गुण गण प्रिय वानी ।
गावहिं सुठि सहचरी परम प्रमुदित रस सानी ॥ ६ ॥
नित्य परम प्रिय अहैं सखिन युत सिय जू के पिय ।
याते सखि समुदाय गीत गावहिं प्रसन्न हिय ॥ ७ ॥
जग व्यवहार सु रीति तथा कुल रीति वेद विधि ।
सिय पिय केर स्वभाव प्रसंशत सखि सनेह निधि ॥ ८ ॥
अति अनुराग समेत सखिन दो यूथ बनायी ।
कोइ सिय को कोइ पियै प्रसंशत आनँद पायी ॥ ९ ॥
पिय गुण शील स्वभाव माधुरी कोइ सखि गावै ।
कोइ मैथिली स्वभाव शील गुण कहि सुख पावै ॥१०॥
लागीं करन बिबाद परस्पर सखि समुदाई ।
जीतन एकहिं चहैं एक शास्त्रार्थ मचाई ॥११॥
पिय पद पद्म पराग पगीं प्रिय परम सयानी ।
अरुणाम्बर को धरे देह में छबि गुण खानी ॥१२॥

Scanned by CamScanner

बहु बिधु बदनी वाल मैथिली पद अनुरागिनि।
अमृत रूपा पीत बसन धारे बड़ भागिनि ॥१३॥
विपुल विमल चित चतुर चपल सखि पिय पद प्रेमी।
श्वेत बसन तन लसत हँसत छवि निधि दृढ़ नेमी। १४॥
अमित अनूप सु वाम नवल नीलाम्बर धारी।
सिय की अति प्रिय सखीं करैं कौतुक मन हारी ॥१५॥
येहि विधि सखि समुदाय वृत्ति पर्य्याय बसन तन।
धारे सहित सनेह करत सम्बाद मुदित मन ॥१६॥
युगल यूथ कमनीय नायिका नायक केरे।
अंग राग वर दिव्य विभूषण सजे घनेरे ॥१७॥
सुख सुषमा आगार सकल अमृत मय रूपा।
पिय प्यारी युग पत्त जलधि सम अमल अनूपा ।१८॥
तिनको सुख रस दान प्रिया प्रीतम युग चन्दा।
लखि दोउ को मुख चन्द यूथ दोउ परमानन्दा। १६॥
पावत निज मन माहिं बाद आनन्द तरंगा।
पत्त जलधि में उठत पर्गीं सखि रति रस रंगा। २०॥
निज मत थापन करैं अपर मत खण्डन करहीं।
करैं परस्पर बाद रोष में सब सखि भरहीं। २१॥
तेहि च्त्रण मेघ समान मुख्य गन्धर्ब कुमारी।
युगल जलधि में भरत बर्षि संगीत सु वारी ॥२२॥
तदपि तृप्त नहिं होत पत्त पिय को जब हारत।
तब गन्धर्ब कुमारि प्रिया यश कीर्ति उचारत ॥२३॥

Scanned by CamScanner

गाय सरस संगीत परम उत्साह बढ़ावत ।
जब हारत सिय पक्ष पिया यश कीर्ति दृढ़ावत ।।२४।।
पिया सुयश को गाय हृदय उत्साह बढ़ाई ।
मानो येही मेघ सु जल बर्षत हर्षाई ।।२५।।
सब गन्धर्व कुमारि सुयश संगीत मधुर जल ।
बर्षावत मन मुदित परम पावन अति निर्मल ।।२६।।
बाढ़ेउ विपुल बिबाद करत उत्तर प्रति उत्तर ।
येही तृप्त न होव युगल दल हिय उमंग भर ।।२७।।
जब देखा रसिकेश श्याम सुन्दर रघुनन्दन ।
हारै गो मम पक्ष बिचारहिं पिय जग वन्दन ।।२८।।
तब प्यारी अरु सखी करैंगी मम अपमाना ।
अस बिचार अवनीश सुवन भय अन्तर्द्धाना ।।२९।।
तब मृगनयनी वाम सकल हिय में अकुलाई ।
परम खिन्न तन भईं यथा वर बेलि सुखाई ।।३०।।
बोलीं श्री मैथिली सखिन सों कलह तुमहिं प्रिय ।
कीनो विपुल बिबाद भये अन्तरहित मम पिय ।।३१।।
उन जीवनधन प्राण बिना अब हम क्या करिहैं ।
बिष खायें जरि अग्नि कूप गिरि अति द्रुत मरिहैं ।।३२।।
फाँसीं गले लगाय मरैं गति यही हमारी ।
अपर नहीं गति मोर सबनि मिलि बात बिगारी ।।३३।।
पर पिय केर वियोग विरह में मरणौ माहीं ।
छूटि जाय यह देह शोक तो छूटै नाहीं ।।३४।।

Scanned by CamScanner

याते मरणौ व्यर्थ महादुख ही अब पैइहैं।
पिय के बिषम बियोग माहिं दिनरैनि गमैइहैं ॥३५॥
जीवन प्राणअधार बिना दुख दूर न होई।
वही नित्य गति मोर अपर साधन नहिं कोई ॥३६॥
निकलत तन से प्राण देह अपवित्र कहावै।
वामें कुछ नहिं बचन नष्टता संज्ञा पावै ॥३७॥
ऐ मृगनयनी चपल केलि मुग्धा सब वाला।
मेरे प्राण अधार रूप रस निधि छबि जाला ॥३८॥
अन्तर्हित करि दये तुमनि ने ठानि बिबादा।
उनके विन केहि भाँति लहै मम हिय अह्लादा ॥३९॥
पर मम तन, मन, प्राण, जीव, के सखा सुजाना।
केवल नृपति किशोर रसिक वर नहिं कोउ आना ॥४०॥
प्रीतम प्राण अधार जीव हम उन की देही।
वेही सच्चे अहैं हमनि के परम सनेही ॥४१॥
जैसे मृतक शरीर सुधा पाये जी जावत।
तैसेहिं पिय को पाय हमहुँ जीवित कहलावत ॥४२॥
नाहित मृतक समान पिया बिन जीवन नाहीं।
जीवत हू जग दुखित मृतक संज्ञा हम पाहीं ॥४३॥
याते त्यागे देह बनै नाहिन कछु कामा।
पूरण करिहैं आश रसिक मणि पिय छवि धामा ॥४४॥
सूखे काष्ट समान देह पिय विरह अग्नि सम।
मेरी विरह उसाँस पवन सम सब विधि अनुपम ॥४५॥

Scanned by CamScanner

याकी पाय सहाय विरहनल हमनि जराई।
पुनि सारे जग काहिं ताप से देइ तपाई ॥४६॥
याही जगमें अहैं हमनि के प्राण अधारे।
ताप उनहुँ को लगै सहैं किमि अति सुकुमारे ॥४७॥
याते धीरज धरहु हृदय में जनि घबरावहु।
नष्ट करो नहिं देह पिया युत जगत बचावहु ॥४८॥
येहि विधि विरह वियोग परम संतप्त किशोरी।
कहैं मधुर वर वयन मैथिली अति रस बोरी ॥४९॥
वाही समय सनेह सिन्धु रूपामृत जलधर।
श्यामल मेघ समान मंजु मूरति किशोर वर ॥५०॥
प्रगटे श्री रघुनन्द परम आनन्द कन्द पिय।
हर्ष अश्रु से बर्षि भिजावत प्रियै मुदित हिय ॥५१॥
अखिल बाम अभिराम काम पूरक उदार तर।
प्रगट निरखि मैथिली हर्षि भेटीं लगाय उर ॥५२॥
दोउ किशोर चितचोर परस्पर प्रीतम प्यारी।
भेंटत भरि अँकवार कण्ठ लगि परम सुखारी ॥५३॥
चूमत अमल कपोल परस्पर चखत अधर रस।
हँसि दृग दृगन मिलाय रसिक दोउ होत नेह वश ॥५४॥
येहि विधि युगल किशोर मुदित मन प्यार समाने।
गाढ़ालिंगन करत तदपि हिय में न अघाने ॥५५॥
कौतुक प्रिय मैथिली कहैं पिय से मृदु वानी।
मंजुल मधुर सु वयन पिया हिय आनँद दानी ॥५६॥

Scanned by CamScanner

हे जीवन धन प्राण सर्व रत्तक प्रिय नायक।
निज आश्रित सुख दान प्रेम पालक सबलायक ॥५७॥
तव पद पंकज भजन सतत हम निशिदिन करहीं।
मंजु माधुरी निरखि हृदय में अति सुख भरहीं ॥५८॥
हमको जानत आप कहिय केहि कल्प मझारी।
सेये नहिं तव चरण कंज भरि मोद अपारी ॥५९॥
यह कहि सकत न आप कदा हम तुमहिं विसारी।
अमुक कल्प में रहीं विलग तुम से धनुधारी ॥६०॥
जैसे बारि तरंग कदा हू भिन्न न होई।
सन्तत रहत अभिन्न एक जानत सब कोई ॥६१॥
तैसेहिं हम से आप, आप से हम सब काला।
हैं सर्वदा अभिन्न विचारहु रूप रसाला ॥६२॥
सुनि प्यारी के वैन चैन प्रद नैन नचाई।
बोले रसिक नरेश राजनन्दन मुसुकाई ॥६३॥
तुम मम प्रिया अभिन्न सर्वदा यह हम जानत।
पर ऐश्वर्य स्वरूप आपको नहिं पहिचानत ॥६४॥
यथा लखै कोइ स्वप्न माहिं आश्चर्य बस्तु वर।
जागि करै अनुमान बहुरि तेहि को प्रमोद भर ॥६५।
तथा करौं हिय माहिं सतत मैं अनुसंधाना।
पर तुम्हरो ऐश्वर्य वास्तब में नहिं जाना ॥६६॥
पूर्व किसी भी समय लखा ऐश्वर्य तिहारो।
करि सोइ अनुसंधान आपने हृदय बिचारो ॥६७॥

Scanned by CamScanner

मैं नहिं जानौं अपर आप लक्ष्मी हमारी।
मोसे रहत अपृथक साथ ही रहो सदा री ॥६८॥
यथा लक्ष्मी विष्णु देव तजि अनत न जावें।
सेवत नित पद पद्म प्रेम पगि आनँद पावें ॥६९॥
तथा प्रिया जू सतत हमारी परम पियारी।
विहरत मेरे साथ करत सब भाँति सुखारी ॥७०॥
हे सखि हे मम प्रियै बहुत क्या कहौं बनाई।
सर्वात्मना हमारि हृदयदयिता सुख दाई ॥७१॥
यद्यपि ये वर वाम विपुल त्रयलोक मझारी।
अग्रगण्य भू माहिं धन्य तम धन्य बिचारी ॥७२॥
मैं अपनाईं सकल तदपि तुम सम मो कहँ प्रिय।
नाहिन कोइ वर वाम स्वयं जानहु तुम निज जिय ॥७३॥
केहु तिय को सत्कार करौं मैं तवसम नाहीं।
अस मेरो दृढ़ भाव तुमहुँ जानति मन माहीं ॥७४॥
पर यदि भाग्य वशात् मधुर सुन्दर सु भोग्य वर।
हो जावै कहिं प्राप्त वाहि भोगै प्रमोद भर ॥७५॥
वाके जन्मस्थान केर नहिं करै बिचारा।
उत्तम रस मय जानि स्वाद ले भरि उद्गारा ॥७६॥
तैसेहिं इन नायिकन केर कुल उत्तम नाहीं।
तदपि रूप, गुण, शील, रत्न सम सुन्दर आहीं ॥७७॥
तुम्हरी अनुमति पाय इनहिं निज संग रमावौं।
मैं रमि इनके साथ परम रस स्वाद करावौं ॥७८॥

Scanned by CamScanner

कहि येहि विधि वर बचन रचन रस रूप तरंगा।
लम्पट काम सु केलि शील गुण भरे उमंगा ॥७६॥
जो सब जग में रमत सबै निज अंग रमावत।
सोइ रसिकेश सनेह भरित सिय सों बतरावत ॥८०॥
अन्य नायिकन ओर भूलि तेहि क्षण न निहारत।
लखि प्यारी मुख कंज मंजु नित सर्वस वारत ॥८१॥
सम्भाषण नहिं करैं अन्य सखि सों सुजान पिय।
केवल श्री मैथिली प्यार पागे प्रमोद हिय ॥८२॥
लखि दोउ की अति प्रीति परस्पर सब वर वामा।
मन में करैं बिचार लहत अतिसय अभिरामा ॥८३॥
चौसर आदिक खेल अपर बहु हास्य विहारा।
सम्भाषण वर नृत्य गान नित विविध प्रकारा ॥८४॥
करत एक ही साथ एक आसन पर सिय पिय।
भोजन अरु रस पान करत चर्वण सु पान प्रिय ॥८५॥
अंगरादि बहु भोग करत नित एक संग में।
पावत परम प्रमोद पगे रति रस उमंग में ॥८६॥
श्री रघुराज किशोर सतत मैथिली प्रीति पगि।
करत विनोद बिहार विविधि विधि निश्चय हिय लगि ॥८७॥
तैसेहिं श्री अवनिजा अनेकन भोग विहारा।
प्राणनाथ सँग करैं भरीं रस रंग अपारा ॥८८॥
दोनो रसिक प्रवीण अन्यतिय को न निहारत।
पगे परम अनुराग परस्पर तन मन वारत ॥८९॥

दासी दास समान दोउन की दोउ सेवकाई ।
करत हृदय हर्षाय आपनो सत्व भुलाई ॥६०॥
पर यह अनुचित कछु न प्रेम की यही बड़ाई ।
बँधिदोउ प्रेम सु पास करत सब काम सिहाई ॥६१॥
प्रिया प्रेम परतन्त्र मन्त्र मोहनी हँसन वश ।
नायक नवल किशोर रास रसिया उदार यश ॥६२॥
तैसेहिं प्रिया प्रवीण प्राण प्रीतम सु प्रेम पगि ।
करैं केलि कमनीय मोद हिय भरित कण्ठ लगि ॥६३॥
येहि विधि प्रेम प्रमोद पगे लखि सिय पिय काहीं ।
नवल नायिकन वृन्द सकल निज हिय हर्षाहीं ॥६४॥
निज से देखि विरक्त दोउन को सब वर बाला ।
विपुल मनोरथ सहित कहैं सुठि वयन रसाला ॥६५॥
एकै करि संकेत बचन इमि कहत सुनाई ।
अतुल पुण्य सुख पात्र मोर कुल जग में अहई ॥६६॥
नाश वान जग सकल अहै मो कहँ अविनासी ।
ऐसे ही धन मोर अचल सब विधि सुखरासी ॥६७॥
तथा हमारे स्वजन सकल दुख रहित सुखारी ।
प्रथक न हम से कदा सदन सुन्दर मन हारी ॥६८॥
गृह अतिसय रमणीय अन्य सब बस्तु हमारी ।
सब प्रकार रमणीय सतत सब विधि सुख कारी ॥६९॥
सो हम सब वर वाम स्वजन' धन, श्रेष्ठ त्याग करि ।
इनको रक्षक जानि शरण आई' उमंग भरि ॥१००॥

Scanned by CamScanner

यद्यपि हम सब अहैं सखी इनकी अति प्यारी ।
तदपि युगल रसिकेश रास लम्पट मन हारी ॥१०१॥
अति उदारता रहित निपट हम सबनि भुलाई ।
बनि अति कामुक सकल धर्म मर्याद मिटाई ॥१०२॥
हम सबही की ओर नहीं कछु कीन विचारा ।
चक्रवर्ति नृप सुवन कहावत परम उदारा ॥१०३॥
इन के ही पद कंज माहिं अचला दृढ़ भक्ती ।
हब सब की सब भाँति अहैं नहिं कहुँ आशक्ती ॥१०४॥
येही सब विधि अहैं भावस्थान हमारे ।
यह सब बातैं भूलि युवावस्था मतवारे ॥१०५॥
केवल एक मैथिली संग रस रंग समाने ।
भोग विलाशाशक्त मोह अंधे मन माने ॥१०६॥
करत विहार अपार हमनि तृण सरिस न मानत ।
जो चाहैं सोइ करैं येही निज मन में जानत ॥१०७॥
अस विचारि सब वाम परम अभिराम श्याम पिय ।
अतिदुस्त्यज सब भाँति रूप रस सिन्धु सरस हिय ॥१०८॥
तिनहिं त्यागि सब वाल गईं जहँ तहाँ सिधाई ।
जिनहिं एक रघुवीर त्यागि गति अन्य न भाई ॥१०९॥
पिय सँग केवल रहीं एक मिथिलेश किशोरी ।
गवनी सीताशरण सकल सखि जेहि तेहि ओरी ॥११०॥

दो०-कोइ रमणी तहँ नहिं रही, जहँ सिय पिय अति प्यार ।
"सीताशरण" पगे करत, विपुल विनोद बिहार ॥६॥

Scanned by CamScanner

तब रसिकेश उदार प्राण वल्लभ रघुनन्दन ।
अति आश्चर्य समेत बिचारत पिय जग वन्दन ॥ १ ॥
मैं समुझत येहि भाँति रहा अपने मन माहीं ।
मेरो रूप अनूप अपर मो सम कोइ नाहीं ॥ २ ॥
जो कोइ मम माधुरी सुछवि एक बार बिलोकै ।
फिर अस कौन समर्थ तिया जो निज मन रोकै ॥ ३ ॥
मोहिं विलोकि वर वाम कोई केहु ठौर न जावै ।
मेरी छवि माधुरी माहिं मन चित्त फसावै ॥ ४ ॥
पर यह उलटा भयो मोहिं तजि सब वर वाला ।
जहँ तहँ गईं सिधार परम रमणी छवि जाला ॥ ५ ॥
यह सबदैव प्रभाव चलो कछु वश न हमारा ।
है भविष्य का प्रवल पराक्रम अमित अपारा ॥ ६ ॥
दैव रूप श्री प्रिया तासु इच्छा बलवाना ।
करि न निवारण सके हमहुँ येहि भाँति सुजाना ॥ ७ ॥
हिय अति करुणा भरत प्रगट नहिं प्रियै जनावत ।
निज मन करत बिचार सिया भय कहि नहिं पावत ॥ ८ ॥
ऐसा मन में सोचि सु छवि निधि राजकिशोरी ।
तिन सँग लागे करन सु क्रीड़ा प्रेम विभोरी ॥ ९ ॥
तदपि सखिन के चले जानका सोच भरेचित ।
करुणा युत मन खिन्न मनहुँ खो गयो परम वित ॥१०॥
पिय हियकी गति जानि सरस चित अवजि कुमारी ।
निज मन कियो बिचार दुखित चित रास विहारी ॥११॥

Scanned by CamScanner

हम दोउन को त्यागि सखी सब विपिन मझारी ।
जहँ तहँ गमनी सकल पिया मन सोच अपारी ।।१२।।
तासु निवारण हेतु सकल कल कला कुशल वर ।
निज स्वभाव सम्पन्न विपुल विद्या प्रमोद कर ।।१३।।
जेती क्रीड़ा केलि कला विद्या समुदाई ।
सकल स्वभावविक अहै कबहुँ काहू न सिखाई ।।१४।।
निजसु अंग से प्रगट करीं शक्तियाँ अपारा ।
परम मनोरम रूप सु नख शिख ललित शृँगारा ।।१५।।
प्यारी सरस स्वभाव शील गुण खानि सयानी ।
सुषमा निधि रस रूप अमल अनुपम सुख दानी ।।१६।।
गावहिं गीत रसाल विपुल संगीत प्रगट करि ।
पिय को अति सुख देहिं हृदय अतिसय उमंग भरि ।।१७।।
येहि विधि श्री मैथिली परम एकान्त मझारी ।
जीवन धन रसिकेश रमण को कीन सुखारी ।।१८।।
दासी सम सब भाँति करी सब विधि सेवकाई ।
पिय को स्वामि सु भाव परम रस रंग रँगाई ।।१९।।
तब पिय परम प्रवीण भजन करता जन के प्रिय ।
बन्धु सरिस सौहर्द कृपा सागर उदार हिय ।।२०।।
निज मन करैं बिचार हमारी प्राण पियारी ।
मम सेवा हित धरे अनूपम रूप अपारी ।।२१।।
तो हम को भी उचित अनेकन रूप बनावौं ।
निज रंग सबहिं रँगाय रमौ तिन काहिं रमावौं ।।२२।।

Scanned by CamScanner

प्रिया सरिस गुण, शील, वयस रस निधि प्रभाव वर ।
लीला लम्पट ललन विलासी परम सु छवि धर ॥२३॥
अपने सरिस अनेक दिव्य वर रूप बनाये ।
देत प्रिषै आनन्द परम रस सिन्धु समाये ॥२४॥
जब अनेक तन भईं प्रिया प्रीतम अनेक तन ।
धारे सहित सनेह लगे विहरन प्रसन्न मन ॥२५॥
तब प्रीतम अनुकुल करैं क्रीड़ा सिय प्यारी ।
प्यारी रुचि अनुकूल रमै रस रास विहारी ॥२६॥
येहि विधि अमित अनूप देवियन संग रंग भरि ।
रमत अमित रसिकेश श्याम सुन्दर सु केलि करि ॥२७॥
तैसेहिं अमित अनूप रूप रसिकेश पिया सँग ।
रमै विपुल मैथिली पिया के परम प्रेम रँग ॥२८॥
एकै श्री मैथिली अनेकन रूप बनाई ।
अनुभव पिय को कियो तृप्ति तबहूँ नहिं पाई ॥२९॥
नहिं चित भयो विराम तथा रसिकेश सुघर वर ।
धारि अनेकन रूप प्रिया सँग रमत मोद भर ॥३०॥
तदपि विराम न होत हृदय में तृप्ति न मानत ।
अरस परस दोउ रसिक प्रीति रस में चित सानत ॥३१॥
पावन प्रेम परत्व प्रभा पूरित पिय प्यारी ।
बढ़त नवल अति चाह हृदय में अमल अपारी ॥३२॥
तब निज मन में कीन मैथिली विमल विचारा ।
आत्म देव प्राणेश रसिक मणि नृपति कुमारा ॥३३॥

Scanned by CamScanner

सरस स्वकीयन पूज्यनीय सौजन्य गुणाकर।
करत परीक्षा मोर प्राण वल्लभ उदार तर ।।३४।।
वात्सल्य, करुणादि, दया, सौहार्द, शील, वर।
येही गुण सौजन्य बतावत विज्ञ मुख्य तर ।।३५।।
हिय रखि अति सौहार्द सुजन पालक जो करई।
रक्षा करि सब भाँति हृदय में आनँद भरई ।।३६।।
यह गुण प्यारी माहिं अहैं अथवा की नाहीं।
लेत परीक्षा प्रवल सोचि अस निज मन माहीं ।।३७।।
तो यथार्थ यह बात स्वजन मोहिं पूजनीय वर।
जानि सकल गुण खानि होय आश्रित प्रमोद भर ।।३८।।
बहुरि दीन की भाँति अगर अतिसय दुख भारी।
पावै बारम्बार मोहिं धिक्कार अपारी ।।३९।।
सकृत भरै निज उदर अन्य को भला न करई।
वाको अति धिक्कार स्वयं ही आनँद भरई ।।४०।।
जो समर्थ सब भाँति होत दुख दुखिया केरो।
हरि नहिं रक्षा करै वाहि धिक्कार घनेरो ।।४१।।
जो कोइ अति धनवान सु पात्रै दान न देवत।
वाको अति धिक्कार अयश अपने शिर लेवत ।।४२।।
अपने में अनुराग करै पालै नहिं ताको।
वह जन अतिसय नीच अहै पुनि-पुनि धिक वाको ।।४३।।
आत्मज्ञान को पाय शिष्य उर ज्ञान प्रकाशा।
करि न हरै संसार मिटावै नहिं जग आशा ।।४४।।

Scanned by CamScanner

भव बन्धन नहिं हरै वाहि धिक्कार अपारा ।
केवल गुरू कहाय करै सुख भोग बिहारा ॥४५॥
महती परम बिभूति वाहि सब विधि धिक्कारा ।
आश्रित स्वजन काहिं न हो यदि सुखद अपारा ॥४६॥
निज जन सकै न भोग भूति सो व्यर्थ कहावै ।
जासु अछत हूँ स्वजन सनेही यदि दुख पावै ॥४७॥
तेहि तिय को धिक्कार परम प्रिय पति जेहि चाहै ।
ऐसे पति को त्यागि भोग रुचि को निर्वाहै ॥४८॥
शुद्ध भाव सम्पन्न सखी सन ईर्षा करई ।
अभागिनी सो छुद्रतरा असती दुख परई ॥४९॥
करि येहि भाँति बिचार विपुल सन्तप्त अपारी ।
श्री मैथिली पुनीत लहैं मन में दुख भारी ॥५०॥
बोलीं पिय सों वयन परम रस अयन चयन कर ।
हे प्राणेश उदार रूप रसिया प्रवीण तर ॥५१॥
चली गईं सखि सकल अपेच्छा कछु नहिं तुम को ।
क्या वे सभी उपेक्षणीय वतलाइय हम को ॥५२॥
इन सब के अतिरिक्त अपेक्षा अन्य तिया की ।
क्या मोहिं चाहिय करन बताइय बात हिया की ॥५३॥
क्या हम दोउ येहि भाँति सदा निर्जन मन माहीं ।
सेवन करि बहु भोग अकेले ही हर्षाहीं ॥५४॥
क्या हमरे वर महल सखिन बिन शूनेहिं रहिहैं ।
कहिये उनके बिना आप हम दुख ही सहिहैं ॥५५॥

Scanned by CamScanner

महा विभूति अपार आप की क्या गति इसकी ।
होगी जीवन प्राण भोग वनिहै यह किसकी ॥५६॥
तथा आपकी देह गेह की कवन सु गति वर ।
होगी जीवन प्राण कहिय रसिकेश मोद घर ॥५७॥
निज आश्रित जन काहिं बस्तु जो सुख न बढ़ावै ।
सो आवै किस काम व्यर्थ रक्षत श्रम पावै ॥५८॥
पुनि मम देह सम्हार करै को विपुल उपाई ।
कहिये राजकिशोर प्राण वल्लभ सुख दाई ॥५९॥
ये सब सहचरि वृन्द बसन भूषन बहु भाँती ।
मम अँग माहिं सजाय करैं सेवा उमगाती ॥६०॥
अब उन सबके बिना कौन मम करै सम्हारा ।
कहिये रसिक नरेश स्वजन सुखदान उदारा ॥६१॥
चक्रवर्ति नृप कुँवर आप हे प्राण अधारे ।
मैं पटरानी तासु अकेली रहौं सुखारे ॥६२॥
क्या मो कहँ यह उचित बताइय राजदुलारे ।
तुम सुजानता सींव प्रेम लम्पट मन हारे ।६३॥
जग में जेते नृपति सबनि की जितनी रानी ।
तिन सब की स्वमिनी कहावै जो पटरानी ॥६४॥
वाकी सेवा माहिं सुखद दासी कोउ नाहीं ।
जो वाको प्रिय करै उचित यह कोउ न बताहीं ॥६५॥
जब साधारण नृपति केर रानिन की दासी ।
सेवा निपुण अनेक करैं निशि दिवस हुलासी ॥६६॥

Scanned by CamScanner

तो सोचिय हृदयेश अहौं मैं चक्रवर्ति तिय ।
केहि विधि रहौं अकेलि सुखी हे रूप रसिक पिय ।।६७।।
जो नृप रानिन केर विपुल विधि सार सम्हारा ।
करै सनेह समेत सतत भरि हिय उद्गारा ।।६८।।
पालन पोषण करै वही नृप जियत कहावत ।
जो नहिं पालै तिनहिं जगत में अपयश पावत ।।६९।।
नष्ट भ्रष्ट करि देइ सो नृप मानहुँ यम रूपा ।
तृतिय न गति तिय केर सुनहु हे रघुकुल भूपा ।।७०।।
याते हे चितचोर रसिक चूड़ा मणि छवि धर ।
सकल सुखिन की एक सुगति तुमहीं उदार तर ।।७१।।
सब शुभ गुण गण खानि दया सौहार्द शील निधि ।
श्री मैथिली उदार पिया सों बोलीं येहि बिधि ।।७२।।
सुनि प्रिय बचन रसाल प्रिया के सुखद मधुर तर ।
बोले रसिक नरेश प्राण वल्लभ सनेह घर ।।७३।।
हे प्राणाधिक प्रिये सजीवनि मूरि हमारी ।
मैं चाहौं कछु कहन सुनिय मन मुदित सुखारी ।।७४।।
हे विदेह नन्दिनी रावरो रास सरस तर ।
मोह्यो सब संसार विमोह्यो मैं प्रमोद भर ।।७५।।
यह अद्भुत रस रास मुनिन वन्दित सुख सागर ।
शिव अज केर समाधि विभेदन करन उजागर ।।७६।।
सखिन कर्ण पथ गयो न तो सब हिय अकुलाई ।
आर्तीरास मझार रावरे निकट सिहाई ।।७७।।

Scanned by CamScanner

अतः प्रिये अस लगै गुप्त एकान्त कुंज में ।
सोईं सब सहचरी सुखद सुठि सरस पुंज में ॥७८॥
याते हे मैथिली मोद मन्दिर मन हरनी ।
हम दोउ खोजैं सखिन सतत जो तव प्रिय करनी ॥७९॥
सरस स्वकीया सखी सकल विधि मम सुख दाई ।
तिनहिं प्रिये केहि भाँति सकैं हम तुम विसराई ॥८०॥
कदा उपेक्षा करि न सकौं तिन की हे प्यारी ।
सतत अपेक्षा हमैं अहैं वे तव हित कारी ॥८१॥
तब सेवा सुख लागि अवसि हम विपिन मझारी ।
सखियन खोजन हेत जात चलिये सुकुमारी ॥८२॥
वदत सूत मुनिराज सुनिय हे शौनक मुनि वर ।
बचनामृत रस पान करत पिय प्यारी छवि धर ॥८३॥
पुनि दोउ सखिन सनेह सने खोजत अकुलाई ।
अन्वेषण करि थके कहूँ सखि एक न पाई ॥८४॥
विपिन भूमि सब खोज भये चिन्तित पिय प्यारी ।
जब नहिं पाये सखिन रास रसिया मन हारी ॥८५॥
श्री रघुराज किशोर शरद की रात्रि सुखद वर ।
सुमन सु शोभा निरखि अमल चन्द्रमा मोद कर ॥८६॥
सुन्दर वेणु मझार मन्त्र मन्मथ उमंग भरि ।
बादन कियो बिनोद बलित कौतुक कलोल करि ॥८७॥
सप्त सु स्वर रमणीय परम कमनीय हरन हिय ।
वेणु गीत करि श्रवण भईं व्याकुल सब निज जिय ॥८८॥

Scanned by CamScanner

सब को मन चित बुद्धि हृदय आकर्षेउ रघुवर।
आईं सिय पिय पास प्रेम पूरति प्रवीण तर ॥८६॥
साँझ समय जेहि भाँति एका एक व्योम मझारी।
तारा गण समुदाय प्रगटि निज ज्योति पसारी ॥६०॥
तथा सकल सखि वृन्द वंश अभिमान शील गुन।
तजि आईं पिय पास प्रेम पगि भरि उमंग मन ॥६१॥
लखि तिन को घनश्याम राजनन्दन रघुनन्दन।
बोले बचन सनेह सहित रस निधि जग वन्दन ॥६२॥
हे सब सखि समुदाय शील शोभा गुण आगरि।
परम भाग्यशालिनी सरस रमणी नव नागरि ॥६३॥
हम तुम सब के अहैं तथा तुम सकल हमारी।
स्नेह सु दृष्टि निहारि सतत मोहिं करिय सुखारी ॥६४॥
हम को अपना जानि सदा नव नेह बढ़ाओ।
परम प्यार दर्शाय प्रेम रस पान कराओ ॥६५॥
तुम सब के ही लखे होय कल्याण हमारो।
हम सब नहिं इस योग्य न यह निज हृदय बिचारो ॥६६॥
तुम सब को सौभाग्य सरस सौन्दर्य उदारा।
सज्जन अति प्राचीन प्रशंसत बिबिध प्रकारा ॥६७॥
अतः पाय तव दर्श जगेउ सौभाग्य हमारो।
कहौं न बात बनाय सत्य निज हृदय बिचारो ॥६८॥
यदि तुम सब यह कहो ठगहरी बात तुम्हारी।
नहिं खोजा हम सबनि सर्वथा दीन बिसारी ॥६६॥

तो ऐसी नहिं बात मैथिली युत बहु भाँती।
खोजा "सीताशरण" तुमहिं उपवन तरु पाँती ॥१००॥

दो०—पुष्प लता द्रुम कुंज बहु, हम दोउ भरि अति प्यार।
खोजत "सीताशरण" बन, भा श्रम अमित अपार ॥७॥

अमल कमल से सरस परम कोमल मम रूपा।
श्यामा श्री मैथिली मधुरता सींव अनूपा ॥ १ ॥
खोजा विबिध प्रकार न तुम सब परीं दिखाई।
तुम्हरे विरह वियोग खेद मन भयेउ महांई ॥ २ ॥
जब न पता कछु चल्यो थकेउ करि विपुल उपाई।
तब सप्तम स्वर माहिं बजायेउ वेणु सिहाई ॥ ३ ॥
इन्द्रवाह विख्यात वंश जग माहिं हमारो।
चक्रवर्ति नृप भवन मध्य मम जन्म बिचारो ॥ ४ ॥
पूर्व काल में इन्द्र काहिं निज वाहन करिके।
मेरे पूर्वज कदा चले हिय में मुद भरिके ॥ ५ ॥
औरौ एक रहस्य राम यह नाम हमारो।
जो सब काहिं रमाय रमै सब संग सुखारो ॥ ६ ॥
तुम सब निज वंशादि रूप गुण मान हृदय करि।
गुप्त देश मधि गईं रोष मन में अतिसय भरि ॥ ७ ॥
किन्तु सुनो सखि वृन्द पूर्वज लोग हमारे।
इन्द्रवाह विख्यात भये लहि मोद अपारे ॥ ८ ॥
जग में मेरो हु भयेउ जन्मतेहि वंश मझारी।
याते लईं बुलाय स्ववश करि सब सुकुमारी ॥ ९ ॥

Scanned by CamScanner

अपने निकट बुलाव न यदि तुम सबनि रमाते ।
तो कहिये केहि भाँति सखी हम राम कहाते ॥१०॥
जग में जितने वाद्य विपुल विधि सुखद अनूपा ।
कोइ न सकैं बजाय वाद्य अस कोइ रस रूपा ॥११॥
मैं सोउ लेउँ बजाय भली विधि विपुल वाद्य वर ।
सकलनृत्य कमनीय भेद जानौं विशेष कर ॥१२॥
हाव भाव ग्रीवादि सु कटि लचकावनि मन हर ।
करि कटाक्ष कमनीय नटौं हिय में उमंग भर ॥१३॥
जहँ तक विद्या गान कला संगीत सुखद वर ।
भली भाँति तिन केर भेद जानौं मैं सुठि तर ॥१४॥
मम सब विद्या कला अहैं प्यारी सुख लागी ।
तुम को आनँद दानि अहौ सिय पद अनुरागी ॥१५॥
दोष रहित ये सकल कला विद्या समुदाई ।
मेरे वश में रहैं समय पर प्रगटत आई ॥१६॥
स्वल्प प्रयत्नै कियो सकल विद्या कलादि वर ।
भरीं स्नेह अपार निकट मम हिय उमंग भर ॥१७॥
आईं सब हर्षाय यथा तुम सब सुकुमारी ।
मम सनेह वश निकट आय करि रहीं सुखारी ॥१८॥
सब विधि मम अनुकूल भईं जिमि सब वर वामा ।
तथा कला विद्यादि देत मो कहँ अभिरामा ॥१९॥
तुम सब सखी समाज सकल विद्या कलादि वर ।
अतिसय प्रिय हो मोहिं सततसब विधि प्रमोद कर ॥२०॥

Scanned by CamScanner

मम सब विद्या कला अहैं तुम को सुख कारी ।
तव प्रिय कर सर्वदा सत्य यह बात हमारी ॥२१॥
तुम संग के बिन रमण करैं हम किमि केहु काला ।
किमि पावैं रस स्वाद नवल वर रास रसाला ॥२२॥
मम विद्या अरु मुख्य अंग श्री राज किशोरी ।
श्री मैथिली उदार सतत प्रेमामृत बोरी ॥२३॥
तुम सब मोर उपाङ्ग हमहिं तजि जाव तिहारो ।
उचित न काहू भाँति तुमहिं निज हृदय विचारो ॥२४॥
सुनि पिय के वर बचन रचन रस भरित मधुर तर ।
सकल सखी समुदाय मुदित शोभित पुलकित उर ॥२५॥
बोलीं बचन विशेष विनय युत नवल नागरी ।
प्रीतम प्रीति प्रतीति पगीं रस निधि उजागरी ॥२६॥
हे प्रीतम चितचोर राजनन्दन मन भावन ।
परिकर प्राणाधार स्वजन सुख कर प्रिय पावन ॥२७॥
सब शुभ गुण अरु सकल कला विद्या समुदाई ।
सेवन तुम को करैं मानि निज भाग्य बढ़ाई ॥२८॥
सब विधि तुम निर्दोष शील गुण धाम सुखद वर ।
दोष रहित को चहत सकल जग गुनि मन प्रिय कर ॥२९॥
हे प्रिय तुम्हरे अंग काम मय अति मन हारी ।
मुख पंकज कमनीय निरखि शशि लजत अपारी ।३०॥
शिल्प कारिता सकल सींव इन्द्रियाँ अपारी ।
सरस्वती सम सुखद सरस जिह्वामन हारी ॥३१॥

Scanned by CamScanner

हे जीवन धन नाथ लच्मी भाल तिहारी।
रहित सर्वदा दोष देह तव अति छवि धारी ॥३२॥
पिय अदोष अरु अनघ अमल अनुपम गुण सागर।
प्रीतम प्रीति प्रतीत पगे रस निधि नव नागर ॥३३॥
पर हे लम्पट राज चतुर्ता सींव दुलारे।
गुण गम्भीर्य्य प्रधान राजनन्दन सुकुमारे ॥३४॥
कारण यही विशेष एक याते हे मन हर।
तुम्हरो हिय पाषाण वज्र से अति कठोर तर ॥३५॥
जाको हृदय कठोर चतुर गाम्भीर्य्य प्रधाना।
ताके तन सब दोष स्वयं निवसत करिथाना ॥३६॥
जाको हिय अति सदय दोष तहँ जात डरावत।
जहँ कठोरता लहत सुगमता युत तहँ आवत ॥३७॥
जो जन अति ठग होत सोइ अति चतुर गँभीरा।
निज मन करो बिचार स्वयं तुम हे रघुवीरा ॥३८॥
जो वर्णै निज दोष अन्य के गुणन वखानै।
सोई विशद बिचार वान सज्जन तेहि मानै ॥३९॥
सोइ सद्वक्ता अहैं संत सोइ परम सयाना।
जो संकोच विहाय दोष निज करै बखाना ॥४०॥
जो अति स्वाद समेत सुनै निज गुण सुखपाई।
सुनि गुण दूसर केर करै कबहूँ न बड़ाई ॥४१॥
वाको जानो मूक अहो हे राज दुलारे।
अहि सम टेढ़ी चाल हृदय वाले मन हारे ॥४२॥

Scanned by CamScanner

परम चर्तता युक्त सत्यवादी बनि छवि धर ।
वृत्ती कुटिल उम्हार लोक में भले मान वर ॥४३॥
देवै तुमको लाल पुजाओ सब जग माहीं ।
किन्तु हमनि के साथ कुटिलता चलि है नाहीं ॥४४॥
याते मम सामने सत्यवादी नहिं वनिये ।
हम सब तुम्हरी चाल कुटिल जानै हिय गुनिये ॥४५॥
कूटिवृत्ति से आप सबनि मन रंजन करिके ।
झूठे पंडित बनत कुटिलता हिय में धरिके ॥४६॥
हे प्रीतम हम सकल श्रमिष्ठा सम जिय जानो ।
यह देवी मैथिली देव यानी सम मानो ॥४७॥
नृप ययाति सम आप ललन अपने को गुनिये ।
तव सँग श्री मैथिली धर्म युत बाँधी जनिये ॥४८॥
हम सब वामा विपुल आप सँग काम पियासा ।
आईं पूरी करन हृदय में भरी हुलासा ॥४९॥
देवी श्री मैथिली धर्म युत प्राप्त करीं तुम ।
काम मनोरथ प्राप्ति हेत तव ढिग आई हम ॥५०॥
अतः उचित यह इनहिं मान करि जब रिसियावैं ।
तब पुनि दोउ कर जोर आप इन काहिं मनावैं ॥५१॥
हम सब काम मोर्थ प्राप्ति हित तुमहिं मिलीं पिय ।
अतः अनादर योग्य अवसि निश्चय जानिय जिय ॥५२॥
क्या इससे पिय डरत आप हे रूप रसिक वर ।
हमनि मनोरथ पूर्ण करन में क्यों सकुचत उर ॥५३॥

Scanned by CamScanner

हमरी सेवा करव धर्म में हानि जानि जिय ।
करत बंचना हमनि स्वजन सुख प्रद उदार हिय ॥५४॥
परिहैं धर्म विरोध हमै अस हृदय विचारी ।
पुरवत नहिं अभिलाष हमनि की रास विहारी ॥५५॥
तो यह उचित न तुमहिं लोक सम बेद शास्त्र कर ।
बने सर्वथा दास रहत हे परम सु छवि धर ॥५६॥
साधारण जन सरिस गुरू के दास वने नित ।
करि अनुवर्तन सतत मोद मानत अपने चित ॥५७॥
नित्य लोक में धर्म अर्थ को एक सुफल गुनि ।
निश्चय केवल काममानि करिभोग विपुल पुनि ॥५८॥
मानत परमानन्द सबनि रस रंग रँगाई ।
पुनि सुनिये रसिकेश प्राण वल्लभ रघुराई ॥५९॥
धर्मादिक से साध्य सुफल होवे सो अल्पा ।
तव सेवन मुख चन्द्र लखब सो सुफल अनल्पा ॥६०॥
प्रीतम तव पद कंज केर सेवन सम धर्मा ।
स्वाभाविक नहिं कोइ अन्य जग के जो कर्मा ॥६१॥
येही नित्य अनल्प सदा स्वाभाविक जानो ।
आगन्तुक सब धर्म अन्य निश्चय पिय मानो ॥६२॥
तव मुख दर्शन मिलै धर्म सोइ सर्व प्रधाना ।
वाहि कहै को धर्म करै जो अति व्यवधाना ॥६३॥
सो सुधर्म अरु अर्थ परम निन्दित जग माहीं ।
तुम से मिलन न देय करै व्यवधान सदाहीं ॥६४॥

सोइ सुधर्म सोइ अर्थ देइ तुम काहिं मिलाई ।
न तरु प्रयोजन कौन रहै या जाय नशाई ॥६५॥
हम सब तो सर्वदा तुम्हारे गुण गण माहीं ।
प्रबल पाश में बँधीं त्याग तुम को कहँ जाहीं ॥६६॥
हैं आत्मानुकूल नाथ तव गुण गण सारे ।
मधुर सरस प्रिय स्वसुख सकल विस्तारन हारे ॥६७॥
निज गुण तव अनुकूल चहैं जाको वश कर लें ।
सब विधि स्वारथ साधि स्वसुख अभ्यन्तर भर लें ॥६८॥
याते तुम को त्यागि जाहिं हम सब केहि ठामा ।
तव गुण निज वश किये अनत किमि लह विश्रामा ॥६९॥
जन्म मरन जहँ होय जाय को ऐसे देशा ।
निवसै नित निज धाम सहै किन कोटि कलेशा ॥७०॥
आत्मेश हे नाथ रमण हृदयेश सुघर वर ।
हमनि निराश निमित्त करन तव धर्म सुभग तर ॥७१॥
पालन करि जो धर्म मनोरथ विफल हमारे ।
करत रसिक शिर मौर राजनन्दन मन हारे ॥७२॥
क्या तुम्हार यह धर्म लोप कबहूँ नहिं होगा ।
अवसि होय को नाथ बनैगौ जब संयोगा ॥७३॥
विन कारण वैराग्य हमनि से तुम्हरो प्यारे ।
हम सबको अति दुखद सुनहु रस रूप उजारे ॥७४॥
हम सबको हे नाथ मर्म स्थल छेदन करि ।
देवत अति दुख दाह दया अपने उर में भरि ॥७५॥

Scanned by CamScanner

चक्रवर्ति कुल कमल प्रभाकर रूप विकाशक ।
दायक सुख ऐश्वर्य मोह अज्ञान विनाशक ।।७६।।
हम सबको हिय कमल प्रफुल्लित कीजिय छवि धर ।
दीजिय निज रस रंग अंग को संग मुदित उर ।।७७।।
येहि सुख स्वाद समान हमनि को कोइ सुख नाहीं ।
करके कृपा कटाक्ष लखिय हमरे तन काहीं ।।७८।।
जानि आपनी सखी हमनि को हे उदार हिय ।
कीजिय विपुल विलाश मुदित मन रूप रसिक पिय ।।७९।।
तलफत हमरे अंग परसि तव अंग सरस तर ।
मिटिहै तन को दाह चाह करिये प्रसन्न उर ।।८०।।
कई बार करि चुके परीक्षा हम सबकी पिय ।
भई सकल हम पास बहुरि क्या गुनि अपने जिय ।।८१।।
व्यर्थ परीक्षा करत देत दुख हम सब काहीं ।
तुमको सर्वस मानि चरण नित सेवत आहीं ।।८२।।
ईश्वर तुमको समझ चुकीं अब अन्य कि आशा ।
किंचित नहिं मम हृदय बँधी तव गुण गण पाशा ।।८३।।
तुम्हरोहि रूप अनूप सरस सौन्दर्य मूर्ति वर ।
निवसत हम सब केर हृदय नहिं ज्ञान अन्य कर ।।८४।।
जीवन प्राण अधार तुमहुँ अति आदर कीना ।
रमि रमाय हम सबनि संग प्रेमामृत दीना ।।८५।।
तब पुनि हे हृदयेश परीक्षा करब हमारी ।
व्यर्थहिं रसिक नरेश प्राण धन रास विहारी ।।८६।।

यदि यों कहिये नाथ कि हमने वेणु बजाई ।
तुमको लियो बुलाय सर्वथा स्ववश बनाई ॥८७॥
यह पराक्रम कवन कहिय तब वेणु नाद सुनि ।
जागत सोये सर्फ निकट आवत तुम्हरे पुनि ॥८८॥
निरखत प्रेम विभोर तुमहिं निज भान भुलाई ।
इतना ही पिय नहीं मृगी घेरत सुख पाई ॥८९॥
सुरवामा रमणीय पच्छिगण सुनि मुरली ध्वनि ।
आवत प्रेम विभोर मूढ़ बनि झूमत पुनि-पुनि ॥९०॥
अपने हाथहिं सकल गले निज फाँसी डारी ।
बिना मोल बिकजात तिहारे हाथ बिहारी ॥९१॥
जग में जेते चतुर मूढ़ भे तिन गति ऐसी ।
तो कहिये क्यों नहीं बिकै अबला हम जैसी ॥९२॥
हम मोहीं लखि तुमहिं कवन आश्चर्य महाना ।
कहिये जीवन प्राण रसिक मन हरन सुजाना ॥९३॥
हैं ऐसे ही गीत आप के जिनहि श्रवण कर ।
तीन ग्राम स्वर सप्त सहित जगि जात काम उर ॥९४॥
हम सब प्रमदा वृन्द स्वभाविक गान तान प्रिय ।
लोकोत्तर तव गान विश्वमोहन उदार हिय ॥९५॥
सुनि न होयं आशक्त कहिय केहि भाँति रसिक वर ।
कैसे धारैं धीर बताइय परम सु छवि धर ॥९६॥
अति एकान्त प्रदेश माहिं तव वेंणु नाद वर ।
अति प्रिय सुन्दर सरस मधुर मन हरन मोद घर ॥९७॥

Scanned by CamScanner

श्रवण परत ही मात्र हमारे मनहिं स्ववश कर।
बरबस दियो उखाड़ मान हिय से सुजान वर ॥९८॥
जिमि आराधित शुद्ध हृदय जीवन ते ईश्वर।
राखत नहिं अभिमान स्वआश्रित मन में सुख कर ॥९९॥
विपुल नायिकन केर एक नायक रघुनन्दन।
"सीताशरण" अधार प्रेम पालक जग वन्दन ॥१००॥

दो०–निज प्यारिन के बचन वर, सुनि सुनि पिय उर चैन।
रति प्रवाह अविछिन्न लखि, प्रमुदित राजिव नैन ॥८॥

प्रीतम राजिव नयन अयन सुख स्वाद प्रदायक।
(सीताशरण) सुस्वामि सरस सब विधि सब लायक ॥ १ ॥
पुनि सब सखी समाज सजन सुख स्वाद बढ़न हित।
व्यंग मधुर वर गीत माहिं गुण गावहिं समुदित ॥ २ ॥
तब पिय परम प्रवीण प्रीति पालक प्रिय नागर।
सकल सखिन के संग लगे विहरन रस सागर ॥ ३ ॥
करि बहु केलि कलोल कला कौशल दिखलाई।
विहरत विविधि प्रकार सखिन हिय काम बढ़ाई ॥ ४ ॥
अमित सुन्दरिन संग रमत रसिकेश श्याम पिय।
निर्विरोध साम्राज्य राजनन्दन उदार हिय ॥ ५ ॥
करि बहु भोग विहार सबहिं रस रंग रँगाई।
लेत देत सुख स्वाद यथा रुचि कण्ठ लगाई ॥ ६ ॥
सबकी जिय अभिलाष कीन पूरण सब भाँती।
सो सुख "सीताशरण" सुमिरि पुलकावत छाती ॥ ७ ॥

Scanned by CamScanner

लहि पिय को अति प्यार सकल नायिका नवेली ।
विलसैं विविध विनोद मगन रस निधि अलवेली ॥ ८ ॥
पिय के प्रथम वियोग जन्य परिश्रम तन माहीं ।
सोईं प्रीतम संग सकल सखि दै गल वाहीं ॥ ९ ॥
तब देखैं सब स्वप्न विपुल ऐश्वर्य अपारा ।
सेवहिं श्री मैथिली काहिं मिलि सब अवतारा ॥१०॥
निज ऐश्वर्य समेत स शक्ति न सब अवतारा ।
वन्दत सिय के चरण मानि सुख स्वाद अपारा ॥११॥
मत्स, कूर्म, वाराह, बुद्ध, ह्यग्रीव, कल्कि वर ।
परशुराम, श्रीराम, कृष्ण, वामन, सुजान तर ॥१२॥
श्रीनृसिंह, सब बेद, शम्भु, अज शनकादिक मुनि ।
लोक पाल सब ईश सिया पद पूजत पुनि-पुनि ॥१३॥
श्रीलक्ष्मण श्रीभरत धर्म द्रोहीं जन नाशक ।
श्री शत्रुहनकुमार संत कुल कमल विकाशक ॥१४॥
रक्षक भक्तन वृन्द धर्म धारक धनुधारी ।
सेवत श्री मैथिली चरण लहि मोद अपारी ॥१५॥
स्वामी श्री वैकुण्ठ केर बहु यान निवासी ।
सिद्ध सकल सुर वृन्द चरण सेवत सहुलासी ॥१६॥
अखिलेश्वर श्री वासुदेव आदिक ईश्वर वर ।
देवांगना अनेक राजकन्या सनेह भर ॥१७॥
अष्टादश सिद्धियाँ सकल शक्तियाँ अनूपा ।
सेवहिं श्री मैथिली चरण पंकज सुख रूपा ॥१८॥

Scanned by CamScanner

लखि मिथिलाधिप लली केर ऐश्वर्य उदारा।
मिटा मान जो रहा सखिन के हृदय मझारा ॥१९॥
निज गुण गौरव रूप स्वकुल की कानि भुलाई।
स्वप्न माहिं लखि सिया केर ऐश्वर्य महाई ॥२०॥
दूर भयो अभिमान बढ़ी सिय पद अति प्रीती।
जागि उठीं हर्षाय सकल पागीं रस रीती ॥२१॥
सबने निज मन माहिं सियहिं सर्वेश्वरि जानी।
बार-बार पद कंज मंजु वन्दे सुख मानी ॥२२॥
बार-बार कर जोर विविध विधि विनय सुनाई।
निज अपराध चमाय सिया पद प्रीति बढ़ाई ॥२३॥
कृपा मूर्ति मैथिली कीन सब को सत्कारा।
निज समान सुख स्वाद दियो सब भाँति अपारा ॥२४॥
कियो परम सन्तुष्ट सबहिं श्री राजकिशोरी।
अपनो विरद बिचार दियो सबको रस बोरी ॥२५॥
इमि सब दूषण रहित उच्चगुण खानि अनूपा।
परम पवित्र चरित्र श्रेष्टतम कृपा स्वरूपा ॥२६॥
पुण्यवती सुखमयी धन्य भाजन अनन्य गति।
श्री रघुराजकिशोर चरण पंकज निश्चल मति ॥२७॥
सर्व मान्य मैथिली राम रमणी नव नागरि।
रति निंदक निज रूप शील रस निधि गुण आगरि ॥२८॥
कोटिन सखि सहचरिन संग मिथिलेश लली सँग।
करत विहार विनोद विविधि विधि रँगे प्रेम रँग ॥२९॥

Scanned by CamScanner

कन्या रासी केर सूर्य दिन में श्री रामा।
राजकुमारिन संग रास कर परम ललामा ॥३०॥
दियो तिनहिं सुख स्वाद न्याययुत रूप रसिक वर।
करि बहु केलि कलोल रास लीला उमंग भर ॥३१॥
इमि यह रास विलास सूत शौनक सम्बादा।
वर्णत "सीताशरण" पगे हिय अति अह्लादा ॥३२॥
जयति मैथिली मोद करन रसिकेश उदारा।
चक्रवर्ति नृप सुवन भुवन भूषण सुख सारा ॥३३॥
जयति जानकी जान रसिक जन जीवन नाथा।
गावौं "सीताशरण" सतत तव गुण गण गाथा ॥३४॥
जयति स्वामिनी सीय संग रस रास विहारी।
जय-जय श्री मैथिली मंजु मूरति मन हारी ।३५॥
जयति प्राण की प्राण सजीवनि मूरि हमारी।
जय-जय सिय स्वामिनी सतत आश्रित हितकारी ॥३६॥
जयति पिया मुख कंज मंजु की विमल चकोरी।
जय-जय छवि गुण खानि कृपामयि राजकिशोरी ॥३७॥
जयति विदेह सु वंश कीर्ति कल की विस्तारक।
जय-जय "सीताशरण" लाड़िली जन हितकारक ॥३८॥
जयति रसिक सुख दानि पिया हिय मोद प्रदायक।
जय-जय क्षमा स्वरूप परम रस निधि सब लायक ॥३९॥
जयति सिया सुख कन्द जयति रघुनन्द द्वन्द हर।
जय-जय "सीताशरण" प्राण वल्लभ उदार तर ॥४०॥

Scanned by CamScanner

दो०–जयति कृपा गुन आगरी, पिय चित चोरन हार।
जय जय "सीताशरण" पिय, जीवन प्राण अधार ॥१॥
जयति सजीवनि मूरि मम, श्री मैथिली उदार।
जय जय रसिक नरेश पिय, "सीताशरण" अधार ॥२॥

इति श्री युगल रहस्य माधुरी बिलासे, सीताशरण सुमति
प्रकाशे, राज कन्या रास विलासे
द्वादशोऽध्यायः सम्पूर्णमस्तु ।

❁

पवन सुत कबहूँ वह दिन अइहैं।
जब हम लखि तव कृपा सुमूरति, चरण कमल लपटइहैं।
मृदुकर कंज फेरि मम सिर पर, प्रमुदित आप उठइहैं ॥ १ ॥
हँसि निज कण्ठ लगाय प्रेमयुत, अति वात्सल्य जनइहैं।
करि बहुलाड़ दुलार प्यार भरि, कुशल पूछि सुखपइहैं ॥ २ ॥
हम संकोच सहित तव पदगहि, निज दीनता सुनइहैं।
चूमि-चूमि पावन पद पंकज, आपन भाग मनइहैं ॥ ३ ॥
सीताराम चरण सरसिज शुचि, प्रेम पाय हर्षइहैं।
'सीताशरण' जानि जन आपन, सब प्रकार अपनइहैं ॥ ४ ॥

Scanned by CamScanner

❁ श्रीहनुमते नमः ❁

❊ श्री हनुमान स्तुति ❊

दो०—जय—जय परम उदार प्रभु, भक्तन जीवन प्राण ।
श्री अंजनि सुत कृपानिधि, सियवर भक्त प्रधान ॥१॥
शरण—शरण तव शरण हौं, हे प्रभु पूरण काम ।
करहु कृपा जन जानि अब, हे रस निधि रस धाम ॥२॥

जय-जय श्रीअंजनि दृग तारे । पवन तनय गुण रूप उजारे ॥
जय-जय सियरघुवीर दुलारे । अमल अपूरब चरित तिहारे ॥
जय-जय प्रेमामृत दातारा । पावन सुयश अनूप उदारा ॥
जय-जय परम सुशील कृपामय । युगल प्रीति पागे करुणामय ॥
जय-२ सियवर प्रीति प्रकाशक । निज जनके अघ अवगुणनाशक ॥
जय-जय परम प्रेम रस भीने । ध्यावत नित प्रभु चरित नवीने ॥
जय-जय सियरघुवर प्रियदासा । पूजत प्रभु पद परम हुलासा ॥
जय-जय रसिक जनन रस दाता । शरण सुखद सज्जन जनत्राता ॥
सन्तत युगल नाम अरु लीला । सुमिरत हिय महँ परमरसीला ॥
सकृत कृपाकरि जेहि दिशिदेखत । रघुवर वाको निज करिलेखत ॥
नाशत विपति बिकार अपारा । बारक जाको आप निहारा ॥
हौं अति दीन मलीन दुखारी । अधम अपावन जड़मति भारी ॥
विषय विकार पगी मति मेरी । करहु कृपा विनवौं कर जोरी ॥
मेरे अघ अवगुण न निहारो । निज स्वभाव वश मोहिं उबारो ॥
मैं सबविधि अघ अवगुण खानी । तदपि नाथ तव रति मानी ॥
निर्हेतुकी कृपाकरि स्वामी । अपनाइय हे अन्तर यामी ॥
मैं जगमें शुचि सन्त कहावौं । प्रभुकी कृपा बिमल यश पावौं ॥

Scanned by CamScanner

तदपि पंच बिषयनि मतिलागी। नख शिख भरेउ विकार अभागी॥
याते अस्तुति करौं तिहारी। सुधरै बिगरी बृत्ति हमारी॥
उपजै प्रभु पद प्रीति प्रतीती। पावौं अचल अमल रस रीती॥
जगत प्रतिष्ठा अति दुखकारी। निश्चय जानिय बुद्धि हमारी॥
तदपि चाह मनमें अति जागत सुधा सरिस सबसे प्रिय लागत॥
ऐसी कृपा करहु कपिराई। जग तृष्णा की मूल नशाई॥
नाशै बिषय बासना सारी। प्रिय लागैं सियवर धनुधारी॥
युगल नाम लीला रुचि पावौं। नित्यधाम सीतापति ध्यावौं॥
प्रभु समर्थ सर्वज्ञ सुजाना। तव सेवा बश कृपा निधाना॥
हे प्रभु ऐसी कृपा करीजै। पावन प्रीति युगल पद दीजै॥
सीताराम रूप छवि धामा। दृग भरि निरखि लहौं अभिरामा॥
तुमने रघुवर काज सम्हारे। दासन के सब दिन दुख टारे॥
खल समूह प्रभु आप संहारे। भक्त बिभीषण राज बिठारे॥
अतुलितबल तुम्हरे तन माहीं। देव असुर सब तव सम नाहीं॥
पर में ध्यावौं मधुर स्वरूपा। ललित प्रेम रस रूप अनूपा॥
सौम्य मनोहर परम सु छविधर। हिय बिच हुलसत श्री सिय रघुवर॥
ऐसो सुघर स्वरूप रसाला। दिखलाइय हे अंजनि लाला॥
मैं दृग भरि तव रूप निहारी। लपटौं चरण सरोज सुखारी॥
स्वकर उठाय मोहिं हिय लाई। शिरपर कर फेरत दुलराई॥
शीश सूँघि मुख चूमि सिहाई। कुशल पूछि हँसि कण्ठ लगाई॥
बहुबिधि निज वात्सल्य बढ़ाई। सब प्रकार लीजै अपनाई॥
सिय रघुवीर चरण दृढ़ नेहू। कृपानिधान कृपा करि देहू॥

Scanned by CamScanner

(सीताशरण) यही अभिलाषा । सदा जगत से रहौं निराशा ।।

दो०–श्री सदगुरु सियराम अरु, रसिक चरण शुचि नेहु ।
करुणा सिन्धु उदार प्रभु, हमहिं कृपा करि देहु ।।१।।
साधनहीन अधीन अति, अधम मलीन गमार ।
(सीताशरण) विनय सुनिय, करगहि लेहु उबार ।।२।।
अस्तुति श्री हनुमान की, पढ़ै सनेह सम्हार ।
वाके श्री अंजनि सुवन, रहैं सदा रखवार ।।३।।
सन्तत (सीताशरण)तेहि, सबविधि निज जन जानि ।
परम प्रेम प्रगटावहीं, सियवर सेवक मानि ।।४।।

जयति जय करुणानिधि हनुमान ।
सीताराम प्रेम रस वर्धक, मर्दक मद अभिमान ।। १ ।।
रामभक्त रक्षक खल शिक्षक, आश्रित सुख रस दान ।। २ ।।
(सीताशरण) पन्थ नित निरखत, देहु दरश जन जान ।। ३ ।।

जयति जय रसिकन रति रस दान ।
अति अनन्य सियराम उपासक, प्रेम मूर्ति हनुमान ।। १ ।।
हे सिय रघुवर परम दुलारे, सरल सुशील सुजान ।। २ ।।
"सीताशरण" मधुर प्रिय दर्शन, दीजिय मोद निधान ।। ३ ।।

कृपा अब करिये श्री हनुमान ।
सीताराम अनन्य उपासक, गुण निधि परम सुजान ।
खल दल विपिन विमोह विनाशक, महावीर बलवान ।। १ ।।
सीताराम नाम नित जापक, रसाचार्य रस दान ।
प्रभुपद प्रीति प्रतीति प्रदायक, सब समर्थ सुख दान ।। २ ।।

Scanned by CamScanner

भक्त वछल भक्तन हितकारी, कीरति विशद महान ।
भक्तराज भक्तन सनेह प्रद, सुर मुनि कर गुणगान ॥ ३ ॥
सीताराम चरण सरसिज शुचि, प्रीति देहु निज जान ।
'सीताशरण' शरण में राखिय, हौं सब भाँति अयान ॥ ४ ॥

दरश अब दीजै श्री हनुमान ॥टेक॥
शिशु पनते हौं शरण रावरी, अपनाओ निज जान ।
मदन मान मर्दन सुठि सूरति, सब समर्थ रस दान ॥ १ ॥
दृगभरि निरखि मधुर प्रिय मूरति, पाऊँ मोद महान ।
प्रेमातुर पकरौं पद पंकज, आपन अतिहित जान ॥ २ ॥
निजकर मम शिर फेरि सूँघि शिर, हिय लगाय निजमान ।
'सीताशरण' दुलार प्यार करि, पूछिय कुशल सुजान ॥ ३ ॥

जयति जय पवन पुत्र हनुमान ।
सीताराम परम प्रिय सेवक, महावीर बलवान ।
कीरति कलित लोक तिहुँ व्यापक, रामभक्त सुखदान ॥ १ ॥
निशिचर गन बन बिपुल दहनहित, पावक प्रबल महान ।
सीताराम पुनीति प्रीति प्रद, रसाचार्य रस दान ॥ २ ॥
पूजत पद पंकज सुर नर मुनि, करत सतत गुण गान ।
चाहत नित तव कृपा कोर को, हे सर्वज्ञ सुजान ॥ ३ ॥
स्वारथ रहित चरण सेवा करि, स्ववश किये भगवान ।
सीताशरण कृपा नित निरखौं, दरश देहु जन जान ॥ ४ ॥

इति श्री

Scanned by CamScanner